अध्याय 2

शिक्षा

मसीह का दूसरा आगमन (2:1–12)

उसका दूसरा आगमन अभी नहीं हुआ (2:1, 2)

[1]हे भाइयो, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं [2]कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा, जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ।

आयत 1. एक बार फिर, पौलुस ने एक नया परिच्छेद स्नेह शब्द **हे भाइयो** से आरम्भ किया। **अपने प्रभु यीशु मसीह के आने के विषय** में जो कहा गया उससे स्पष्ट है कि हम सामान्य रूप से "दूसरे आगमन" का उल्लेख करते हैं। यह वही है जिसे पौलुस ने कहा "प्रभु का आना" (1 थिस्सलुनीकियों 4:15) और "प्रभु का दिन" (1 थिस्सलुनीकियों 5:2 की तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 1:10 से करें)। पौलुस ने इस वाक्य "हमारे प्रभु यीशु मसीह" का प्रयोग 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 में भी किया।

इस पत्री में, पौलुस पहले ही भविष्य में समय के विषय में बता चुका है जब प्रभु स्वर्ग से प्रकट होगा (1:7); उसने कहा यह न्याय का बड़ा दिन होगा जब प्रभु कुछ लोगों को "दण्ड" देगा और कुछ लोगों में उसकी महिमा होगी (1:8–10)। आयत 1 में, पौलुस ने ध्यान दिया कि उस समय, वह, थिस्सलुनीके के विश्वासी और अन्य विश्वासी लोग **उसके पास एकत्र होंगे**। "इकट्ठे होंगे" शब्द ἐπισυναγωγή (*एपिसुनागोगे*)[1] से आता है। यीशु ने कहा कि वह "अपने चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे" (मत्ती 24:31)। जिन में प्रभु की महिमा होगी तब वे "सदा प्रभु के साथ रहेंगे" (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। विश्वासयोग्य "उसके पास" इकट्ठे किए जाएँगे।

आयत 2. प्रभु के आने के सम्बन्ध में, पौलुस इस बात के लिए चिन्ताशील था कि थिस्सलुनीकियों के मसीही **शीघ्र ही अस्थिर न हो जाएँ** ("मन अचानक स्थिर न हो जाए"; RSV) या परेशान ("उत्तेजित"; RSV) न हो जाए इस

विषय पर निराधार, झूठी शिक्षाओं के कारण से वह चाहता था कि आसानी से अस्थिर होने की बजाय वे स्वयं को "कट्टरपंथी विचारों के बीच स्थिर रखें।"[2]

"अस्थिर" शब्द यूनानी भाषा के शब्द σαλεύω (*सलेउओ*) से लिया गया है। नया नियम में, *सलेउओ* का सामान्य अर्थ "आन्दोलन करना या उकसाना" होता है (लूका 6:38; प्रेरितों के काम 17:13 के साथ तुलना करें), और यह तूफान में लहरों की खलबली के विचार से आता है। परन्तु, यूनानी साहित्य में, "इसका अर्थ है 'किसी से दूर होना,' एक जलयान तूफान में अपने लंगर से अलग हो जाता है; बाद में यहाँ और प्रेरितों के काम 2:25 में भी प्रत्यक्ष रूप अर्थ प्रकट है।"[3] मसीहियों को उसी ओर बढ़ना चाहिए जहाँ उनके लिए इससे बढ़कर स्थिरता है (देखें इफिसियों 4:14)।

किस स्रोत या किन स्रोतों से यह अशान्ति आई थी? पहला स्रोत, पौलुस ने कहा, कोई **आत्मा** थी या शाब्दिक रूप से "आत्मा के द्वारा" (KJV; RSV)। वह सम्भवतः थिस्सलुनीकियों में झूठे नबियों का उल्लेख कर रहा था जिनका उसने अपनी इस पत्री में संकेत दिया है (1 थिस्सलुनीकियों 5:19–22)। झूठे नबियों ने ऐसा कहा होगा कि झूठी शिक्षा की पुष्टि के लिए उनके पास प्रकाशन है जिसे वह बताना चाहते थे।

दूसरा स्रोत जिससे यह झूठी शिक्षा प्रश्न में आ रही थी, वह यह थी कि वह **वचन** था या "एक संदेश" (KJV; RSV)। यह लगभग निश्चित रूप से मौखिक शिक्षा को दर्शाता है जैसे कि उपदेश करना या निजी रूप से बातचीत करना। वाक्य है मानो हमारी ओर से हो यह "संदेश" को भी बदलता है। यदि यही बात है तो यह सम्भावना है कि वे लोग जो इस शिक्षा का समर्थन कर रहे थे वह कह रहे थे कि उन्होंने इस विषय में पौलुस से व्यक्तिगत रूप से बात की है जब वह थिस्सलुनीके में था और उसने इस प्रश्न में इस शिक्षा की पुष्टि की है।

इस शिक्षा का तीसरा स्रोत था एक ऐसी पत्री है जो "मानो" पौलुस की ओर से हो। कुछ व्याख्याकार विश्वास करते हैं कि यह उल्लेख 1 थिस्सलुनीकियों का है, जिसको झूठे शिक्षकों ने गलत समझा और इसका गलत प्रयोग किया। परन्तु जो भाषा पौलुस प्रयोग करता था ऐसा लगता है कि उसे निकाल दिया गया है। कुछ भी हो "पत्री" जिसके विषय में उसने कहा था असल में वह उसकी नहीं थी। इसलिए, ऐसा आभास होता है कि कुछ झूठे शिक्षकों ने यह दावा किया कि उन्होंने इसे व्यक्तिगत रूप से प्राप्त किया है यह पत्री उनके अनुसार पौलुस से थी। पौलुस ने इस बात से इनकार किया कि उसका इस शिक्षा के साथ कुछ लेना देना है।

प्रश्न में कौन सी गलत शिक्षा थी? यह इस वाक्य में रही होगी **कि प्रभु का दिन आ** चुका है। KJV कहता है, "प्रभु का दिन नजदीक है," परन्तु NIV, RSV, NASB, और अन्य अनुवाद लगभग निश्चित रूप से यह कहने में सही है "आ चुका है।" इसकी पुष्टि करने के कई कारण हैं।

पहला, नया नियम में अधिकांश अन्य घटनाओं में यूनानी शब्द ἐνίστημι (*एनिसटेमी*) इस भाव से लिया गया है कि वह पहले ही से समक्ष लाया गया है (रोमियों 8:38; 1 कुरिन्थियों 3:22; 7:26; गलातियों 1:4; 2 तीमुथियुस 3:1; इब्रानियों 9:9)। आगे, उत्प्रेरित लेखकों ने पुष्टि की है इसके बजाय कि वे इनकार करते कि मसीह का आना "नजदीक" था (फिलिप्पियों 4:5; याकूब 5:8)।[4] इसलिए यह कहना कि नजदीक था यह किसी "गलत" शिक्षा को निर्मित नहीं करता था। तीसरा झूठी शिक्षा यह कि पुनरुत्थान दूसरे आगमन का आवश्यक भाग है यह पहले ही हो चुका है जो कि पवित्रशास्त्र में कहीं अन्य स्थान पर भी वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए, 2 तीमुथियुस 2:17, 18 में हुमिनयुस और फिलेतुस के विषय कहा गया कि उन्होंने इसी शिक्षा को सिखाया था।

इन झूठे शिक्षकों ने अपनी इस शिक्षा को कैसे विकसित किया इसका ठीक-ठीक से वर्णन नहीं किया गया है। कुछ लोग सोचते हैं कि उन्होंने सिखाया मसीहियों का पुनरुत्थान मात्र प्रतीकात्मक था, आत्मिक रूप से वह बपतिस्मा के समय होता है। तब उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पुनरुत्थान तो पहले ही हो चुका है। ऐसा हो सकता है जो उन्होंने सोचा हो कि प्रभु प्रत्येक व्यक्ति के पास व्यक्तिगत रूप से उनके मनपरिवर्तन के समय आता है और इसलिए उन्होंने सोच लिया प्रभु का सार्वभौमिक रूप से आना नहीं दिखेगा जैसे पवित्रशास्त्र यहाँ और अन्य स्थानों पर वर्णन करता है (देखें प्रकाशितवाक्य 1:7)।

इस शिक्षा का सही रूप कोई भी था, पौलुस नहीं चाहता था कि मसीही लोग ऐसी किसी शिक्षा के प्रभाव में आएं जिससे वे अस्थिर हो जाएँ क्योंकि यह स्पष्ट रूप से गलत शिक्षा थी।

उसके आने से पहले की घटनाएँ (2:3–12)

[3]किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि वह दिन न आएगा जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो। [4]जो विरोध करता है, और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को ईश्वर ठहराता है। [5]क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहाँ था, तो तुम से ये बातें कहा करता था? [6]तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे अभी रोक रहा है कि वह अपने ही समय में प्रगट हो। [7]क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा। [8]तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। [9]उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ्य,

और चिह्न, और अद्भुत काम के साथ, 10और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता। 11इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें, 12ताकि जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं, वे सब दण्ड पाएँ।

आयत 3. उस विचार की असत्यता को प्रकट करने के लिए कि प्रभु का दिन पहले ही से आ चुका है, पौलुस ने व्याख्या करना आरम्भ किया कि प्रभु के आने से पहले कुछ बातों का होना अवश्य है। पौलुस ने कहा कि यदि वे थोड़ा ठहरें और चिन्तन करें तो उन्हें स्मरण आएगा कि उसने उनको इसके विषय बताया था जब वह थिस्सलुनीके में था। (देखें आयत 5)। उसने कहा उन्हें कोई **धोखा** न देने पाए। धोखा खाने का अर्थ है पथभ्रष्ट होना, सामान्यतः चालाकी या धोखे के द्वारा। पौलुस ने कहा वह ऐसा **किसी भी स्थिति में** न होने दें, न ही ऐसी किसी पत्री के द्वारा जो उनकी ओर से है दिखाई देती हो (आयत 2) या अन्य किसी उपाय से। यह (प्रभु का दिन, जब मसीह वापस आएगा) **तब तक नहीं होगा जब तक कि धर्म त्याग नहीं हो जाता**। "धर्म त्याग" (ἀποστασία, *अपोस्टेसिया*, "विद्रोह," NIV; "दूर होना," KJV) धर्म त्याग या विमुखता का संकेत करता है, जो कि परमेश्वर और उसकी इच्छा के विरुद्ध होगा, मनुष्य के लिए उसकी योजना से हटना होगा (मत्ती 7:15; प्रेरितों के काम 20:28–31)। यह "विद्रोह" विनाश के पुत्र की अभिव्यक्ति या "प्रकटीकरण" होगा। यह "व्यक्ति" वह जिसका सम्बन्ध कुटिल लोगों के साथ होता है। वह वास्तव में, **विनाश का पुत्र**, या शाब्दिक रूप से "अनन्त मृत्यु का पुत्र" है (KJV)। उसका "सम्बन्ध" विनाश से या उसका "चित्रण" विनाश के द्वारा किया जाता है। वह दण्ड के लिए ठहराया हुआ है। वाक्य ὁ υἱὸς τῆς ἀπωλείας (*हो हूइओस टेस अपोलेइआस*) यहूदा का वर्णन करने के लिए भी प्रयोग किया गया है (यूहन्ना 17:12), जो कि इस संदर्भ में NASB में अनुवाद किया गया है "अनन्त मृत्यु का पुत्र"। पाप या अराजकता को इस व्यक्ति में साकार किया गया है, जैसा कि धार्मिकता को मसीह यीशु में साकार किया गया है।

पाप का पुरुष इस वाक्य के सम्बन्ध में ब्रूस एम. मैटज़गर ने लिखाः

> क्या प्रेरित ने "पाप का पुरुष" लिखा, जैसा अधिकांश लोगों ने पढ़ा है या "अराजकता का पुत्र" जैसे ℵ, बी, 81, 88एमजी, 1739, मारीकॉन टर्टूलियन और अन्य लोगों संपुष्टि करते हैं? विस्तृत बाहरी साक्षी के समर्थन होने के बावजूद भी ἁμαρτίας [*हेमारटीयास*] (तीनों तरह के बाइबल अंश से साक्षीः ए; डी जी; के एल पी अधिकांशतः एक प्रकार का हस्तलेख), कुलमिलाकर यह दिखाई देता है कि पूर्वकाल के

> एलेक्जेंडरीयन ने मूल सामग्री को सम्भाल कर रखा, ἀνομίας [*अनोमिआस*], एक दुलर्भ शब्द पौलुस के द्वारा प्रयोग किया गया, जोकि नकलनवीसों के द्वारा इस शब्द को बदला गया और इस शब्द को बार बार प्रयोग किया गया, γὰρ ... ἀνομίας ... आयत 7 में यहाँ पर ἀνομίας का प्रयोग अनुमान लगाओ जैसा प्रतीत होता है।[5]

इसलिए, पौलुस ने सम्भवतः "अराजकता का पुत्र" लिखा न कि "पाप का मनुष्य।"

वैसे पौलुस ने निश्चयवाचक उपआयत के साथ "धर्म त्याग" शब्द का वर्णन किया है, यह स्पष्ट है कि वह उस बात के विषय लिख रहा था जो वह थिस्सलुनीकियों को पहले ही बता चुका था। बड़े दुख की बात है कि हमने उस बात को नहीं देखा जो उसने उनको बताई थी, इसलिए इसे समझना और भी कठिन है कि उसके कहने का क्या अर्थ था। यह विख्यात विद्रोह मसीह के आने से पहले होगा। जब ऐसा होगा तो यह व्यक्ति प्रकट हो जाएगा जैसे बाद में मसीह अपने दूसरे आगमन पर प्रकट होगा।

आयत 4. पौलुस इस विद्रोह के विषय अन्य सच्चाइयों के साथ आगे बढ़ा। यह "पुरुष" **हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है,** तथा उनका विरोध करता है। वह परमेश्वर की बजाय अपने आप को बड़ा ठहराएगा। यह "पुरुष" सक्रिय रूप से परमेश्वर का और परमेश्वर की बातों का विरोध करेगा क्योंकि **वह परमेश्वर के बजाय स्वयं को बड़ा ठहराता है**। इसके बजाय कि परमेश्वर की स्तुति हो वह अपनी स्तुति करवाना चाहेगा। आगे चलकर वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को ईश्वर ठहराता है। "मन्दिर" के लिए यूनानी शब्द ἱερόν (*हियरोन*) नहीं है, जो आंगन सहित सारे मन्दिर के क्षेत्र का वर्णन किया है, बल्कि यूनानी शब्द ναός (*नाओस*) है। *नाओस* तो "पवित्रस्थान है, मन्दिर के प्रांगण का महा पवित्र स्थान वाला भाग, परमेश्वर का निवास स्थान।"[6] परन्तु हो सकता है "मंदिर" का यहाँ अर्थ केवल अनधिकार ग्रहण किए जाने को दर्शाने के लिए किया गया हो। अर्थात, इसका अर्थ है वह "पुरुष" आत्मिक मन्दिर अर्थात कलीसिया में परमेश्वर का स्थान लेना चाहता है। यह वाक्य "अपना स्थान लेता है" और "अपने आपको ईश्वर ठहराता है" यह एक आधिकारिक स्थापना समारोह की झलक दर्शाता है।

तो यह "पाप का पुरुष" कौन है? *क्या यह पोप समुदाय का सामूहिक संकेत है* जैसा कि एलबर्ट बार्नेस का एक प्रेस्बिटेरियन होने के नाते विश्वास है?[7] उसने पर्याप्त प्रमाण दिया कि "ऐसी कोई दुष्टता नहीं है जो इन्होंने न की हो।" इसके अतिरिक्त, जो उपाधि वह लिए हुए हैं जैसे कि "मसीह के प्रतिनिधि" (या मसीह का स्थान लेना) और "हमारा प्रभु परमेश्वर पोप," इस अधिकार के साथ-साथ वे शासक होने के सभी अधिकारों का दावा करते हैं इस विचार को आकर्षक

बनाता है।[8]

परन्तु, यह तो संदेहजनक प्रतीत होता है कि "इस पाप के पुरुष" में पोप शामिल हैं। पोप का आयत इसकी अचूकता के दावे को सीमित करता है। पूर्ण अराजकता और बुराई उनको चित्रित करती दिखाई नहीं देती है इस विषय में पौलुस के द्वारा उस "पुरुष" को चित्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त, ऐसा प्रतीत होता है पौलुस उस बुराई के विषय बात करता है जो मसीह के दूसरे आगमन से पहले चरम सीमा पर होगी। तब मसीह के दूसरे आगमन पर मसीह के द्वारा उसका नाश होगा (आयत 8–10)। पोप के आयत के सामर्थ्य की चरम सीमा मध्य युग में आई।

अन्य लोगों ने इस "पाप का पुरुष" को *रोमी सम्राट समुदाय के सामूहिक संदर्भ के रूप में देखा है।* वास्तव में उन सम्राटों ने ईश्वर होने का दावा किया और उनमें से कइयों ने पहली शताब्दी के अन्त में लगभग 64 ईस्वी में उनकी आराधना करने की मांग रखी और नीरो के राज्य के बाद उन्होंने मसीहियत को सताया और इसका विरोध किया। यह भी सत्य है कि एक सम्राट कालीगुला ने (12–41 ईस्वी) में अपने स्वयं की मूर्ति को स्थापित करने के द्वारा यरूशलेम के मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा। पौलुस ने जब इस तरह की बातों का वर्णन किया, तो यह असम्भव है कि पौलुस ने इनका उल्लेख किया। पौलुस भविष्य को इंगित कर रहा था और कालीगुला का प्रयत्न तो पौलुस के 2 थिस्सलुनीकियों को लिखने से पहले ही हो गया था।

रोमी साम्राज्य सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए भी था, पाँचवीं शताब्दी के अन्त में पूर्ण रूप से इसका नाश हो गया था; और पौलुस ऐसी सामर्थ्य के विषय बात कर रहा था जो मसीह के दूसरे आगमन से पहले ही चरम सीमा पर होगी। तो उसके मन में ये साम्राज्य कैसे हो सकते हैं? "पाप के पुरुष" को अपने अस्तित्व में आना है और मसीह के द्वारा मसीह के दूसरे आगमन पर उसका नाश किया जाएगा (आयतें 8–10)।

एक अन्य शिक्षा यह है कि "पाप का पुरुष" *स्वयं शैतान* है। "शैतान" शब्द का अर्थ है "विरोधी" और आयत 4 कहती है यह "पुरुष" परमेश्वर और उसके मार्गों का "विरोध" करेगा। कुछ लोग जो इस तरह की धारणा रखते हैं विश्वास करते हैं कि अन्त समय से पहले शैतान अवतरित होगा और एक बड़े संग्राम के लिए अपने कार्यकर्ताओं को इकट्ठा करेगा। यह विचार बड़ा आकर्षक है, विशेष रूप से क्योंकि यहाँ वर्णन किए गए कई अंश बाइबल के अन्य अंशों में शैतान के विवरण के साथ मेल खाते हैं। निश्चय ही मसीह अपने आगमन पर शैतान का नाश करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:10)। परन्तु इस विचार के लिए एक कठिन समस्या आयत 9 में पाई जाती है, जहाँ पौलुस ने कहा कि उस "पाप के पुरुष" का आना "शैतान के कार्यों के अनुसार होगा।" इसलिए, यह निश्चित सी बात प्रतीत होती है कि वह शैतान स्वयं नहीं होगा इसके बजाय, यह वह है जो

शैतान के समानांतर आयत पर कार्य करता है।

अभी एक अन्य विचार और भी है वह यह है कि "अराजकता का पुरुष" एक ऐसा "पुरुष" है जो मात्र इस भाव में है कि दुष्टता कभी-कभी शारीरिक रूप धारण करती है। "अराजकता का पुरुष" इस विचार के अनुसार, *दुष्टता शारीरिक रूप में है।* विचार यह है कि बाद में मसीही युग में, पौलुस के समय के बाद वह यह नहीं कहता कि कितने समय के बाद दुष्टता अपनी तीव्रता में बढ़ती जाएगी (1 तीमुथियुस 4:1–3; 2 तीमुथियुस 3:13; 4:3 के साथ तुलना करें)। संसार का अन्त होने के समय के आस पास, दुष्टता की शक्तियाँ परमेश्वर की सम्पूर्ण आराधना दबाने का प्रयास करेंगी।

यह दुष्टता की शक्तियाँ झूठे धर्मों, नास्तिक शक्तियों और इससे मिलती जुलती सभी शक्तियों को अपने में शामिल करेंगी। ये शारीरिक रूप धारण करेंगी और "अराजकता का पुरुष" कहलाएगी। तब जब ऐसा प्रतीत होगा कि यह "पुरुष" संग्राम जीत गया है (लूका 18:8 के साथ तुलना करें), मसीह आएगा और अपने आगमन की तेजस्विता में उसे नाश करेगा।

शेष अन्य विचारों की तुलना में अपने सभी तथ्यों के साथ यह विचार उचित दिखाई देता है परन्तु किसी भी विचार को आत्मनिष्ठ होने के नाते पहचान लिया जाना चाहिए।

सूचीबद्ध किए गए कुछ विचार, अन्तिम विचार भी शामिल करते हुए, "मसीह विरोधी" के साथ समरूप होने के नाते "अराजकता के पुरुष" के विषय सोचें जिसके विषय 1 यूहन्ना 2:18 में कहा गया है। ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से पता चलता है कि यूहन्ना ने मसीह विरोधी के अपने विवरण में, दुष्टता को मानवीयकरण भी किया था, विशेष रूप से वह दुष्टता जो झूठे शिक्षकों में कार्य करती थी जो मसीह के देहधारण का इनकार करते थे (1 यूहन्ना 4:1–3)। यह प्रत्यक्ष है क्योंकि वह "कई मसीह विरोधियों" के विषय कहता है (1 यूहन्ना 2:18)।

आयत 5. पौलुस ने कहा, वास्तव में, उनको **स्मरण** रखना चाहिए **कि ... वह तुम से ये बातें कहा करता था**। यूनानी भाषा का शब्द λέγω (*लेगो*), का अर्थ है "बताया था" यह अपूर्ण काल में है, यह दोहराई गई बात का संकेत कर रहा है।

थिस्सलुनीकियों को यह बात जाननी चाहिए थी कि अब तक दूसरा आगमन नहीं हुआ था। उनको यह स्मरण रखना चाहिए था कि यह सब दूसरे आगमन से पहले होगा। "अराजकता का पुरुष" अभी प्रकट नहीं हुआ था क्योंकि कुछ बातें उसे "रोके रखे हुए थीं" (आयत 6; NIV)।

आयत 6. शब्द "उसे" "अराजकता के पुरुष" का संकेत करता है (आयत 3, 4), और थिस्सलुनीके के विश्वासी उस **वस्तु को** जानते थे **जो उसे अभी रोक रहा है**, क्योंकि उनको पौलुस के द्वारा बताया गया था जब वह उनके साथ था।

पौलुस के लिखने के समय, इस पुरुष के प्रकट होने को लेकर अभी भी कुछ रुकावटें थीं। "जो" यहाँ अव्यैक्तिक है, परन्तु जो उसे रोकती हैं "वह" के रूप में आयत 7 में वर्णन किया गया है। रोकने वाली शक्ति के प्रति दोनों ही संदर्भ सही हैं। कौन या क्या "उसे रोक" रहा था? कई विचारों को प्रस्तावित किया गया है।

पहला, कुछ कहते हैं कि रोकने वाली शक्ति कोई अन्य सम्राट है। जो लोग इस विचार को रखते हैं उनका विश्वास है कि वे सम्राट "अराजकता का पुरुष" ही है। यह विचार सही नहीं हो सकता क्योंकि "पुरुष" अभी प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं हुआ और कोई सम्राट उसे रोक नहीं सकता (साम्राज्य का तो पहले ही 15वीं शताब्दी में पतन हो गया था)। दूसरा कुछ कहते हैं यह स्वयं एक साम्राज्य है। यह वह हैं जो सोचते हैं "पुरुष" पोप का आयत है। यह विचार भी उसी कारण से असम्भव हैः साम्राज्य अब नहीं रहा, परन्तु "पुरुष" अभी पूर्ण रूप से प्रकट नहीं हुआ है। तीसरा, कुछ लोग कहते हैं कि यह पवित्र आत्मा है। यह सोचते हैं कि यह "पुरुष" शैतान है परन्तु यह विचार भी संदेहजनक है। "दूर न हो जाए" आयत सात में दुष्ट के हिंसात्मक क्रिया का संकेत करता है जो कि रोकने वाले को हटाएगा। पवित्र आत्मा पर कौन सी दुष्ट प्रबल हो सकती है? चौथा, कुछ कहते हैं "रोकने वाला" कानून व्यवस्था का सिद्धान्त है। यह विचार उन लोगों का है जो सोचते हैं यह "पुरुष" एक दुष्ट शारीरिक रूप है। यह रोकने की शक्ति भिन्न शासन और समाजों में सिद्धान्त होंगे जो कानून व्यवस्था में विश्वास करते हैं। रोकने वाली शक्ति के तरीकों सम्बन्धी वर्णन किया गया है, रॉबर्टसन ने लिखा कि इसे "जो रोक रहा है कहा गया है (रोके रखती है, यह यूनानी शब्द κατέχω *काटेकोन*), से है अलिंगी शब्द है और आयत 7 में पुलिंग है [ὁ κατέχων] *होकाटेकोन*।"[9]

जो भी हो, कोई व्यक्ति या कोई शक्ति थी जो इस "पुरुष" को प्रकट होने से रोक रही थी ताकि वह "उचित समय पर ही" प्रकट हो (NIV), जब परमेश्वर उसे होने देगा। यह पौलुस के कहने का ढंग था, "अभी भी सब कुछ परमेश्वर के नियन्त्रण में है। तुम थिस्सलुनीके के विश्वासी भले ही अभी तुम सताए जा रहे हो, आपको स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला है।"

आयत 7. अधर्म का भेद पौलुस के समय में कार्यों का उल्लेख करता है जो स्पष्ट नहीं थे और अभी भी खमीर की तरह थे जो पहले ही से सक्रिय थे। अधर्म शब्द का प्रयोग आयत 3 में "पाप के पुरुष" के विचार के साथ जुड़ता है। यह इस विचार को भी रख सकता है कि वह जो सामान्य रूप से दुष्टता के साथ आचरण कर रहा है, जो कि "पुरुष" मात्र तो शारीरिक रूप के भाव में हैं। पौलुस के दिनों में यह दुष्ट-कार्य कर रहे थे, और **वह उसे ऐसा करने से रोकेगा**। "पाप के पुरुष" के प्रकटीकरण को वर्तमान की रुकावट वह तब तक जारी रहेगी जब तक कि **वह** [वह जो "पाप के पुरुष" प्रकट होने से रोक रहा है] **उसे दूर नहीं**

कर देता। यह वाक्य ἐκ μέσου γένηται *(इक मिसाउ गेनीटाइ)*, यह सम्भवतः हिंसा को हटाने का संकेत करता है, जो "पाप के पुरुष" के प्रकटीकरण को पवित्र आत्मा के रोकने की सम्भावना को अलग करता हुआ (जैसा ऊपर कहा गया है) प्रतीत होता है (जैसा कि स्कॉफील्ड संदर्भ बाइबल के द्वारा बताया गया है)। यह तो सम्भावना नहीं है कि पौलुस ऐसा लिखेगा कि पवित्र आत्मा "जब तक दूर न हो जाए," और यह भी असम्भव है कि वह "दूर किया जाए।" मात्र परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है और वह ऐसा नहीं करेगा।[10] अन्य लोगों ने सुझाव दिया कि जबरदस्ती निकालने का इसका अर्थ नहीं है, परन्तु यह तर्क विश्वासप्रद नहीं हैं।[11]

जैसा कि ऊपर बताया गया है, यदि रोकने की शक्ति शासन और समाज के सिद्धांतों की रचना है जो कानून और व्यवस्था में विश्वास करते हैं, तो यह शक्ति तब तक रहेगी जब तक यह सिद्धांत रहेंगे और लोग जब तक अपने इस विश्वास को थामें रहेंगे। एक बार जब इस तरह के विचार समाप्त हो जाते हैं और अराजकता प्रबल होना आरम्भ करती है, तब दुष्टता की शक्तियाँ निरंकुश छोड़ी जाती हैं। यह प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि पिछले कुछ दशकों में अमेरिका, ब्रिटेन और अन्य देशों में इस स्वभाव के कुछ अंश को लिया है। (रोकने वाले की पहचान की अधिक चर्चा के लिए "अतिरिक्त अध्ययन के लिए : वह क्या है 'जो उसे अभी रोक रहा है' [2:6, 7]" पृष्ठ 60 पर देखें)।

आयत. 8 जैसे ही वह व्यक्ति या शक्तियाँ जो इस अराजक को आने से रोक रही हैं हटा ली जाएँगी, तब वह भी "प्रकट" होगा। यह शब्द 1:7 आयत में मसीह के आगमन के लिए प्रयोग किया गया है और इसका अर्थ है "प्रकट करना"। मसीह और यह "अराजकता का पुरुष" वास्तविक रूप में विरोधी हैं, परन्तु यह वही है, पौलुस ने कहा था, **प्रभु** (यीशु) **उसे मार डालेगा**, या हराएगा। भले ही यह पुरुष अजेय दिखाई दे, **प्रभु अपने मुँह के श्वास से उस पर जीत प्राप्त करेगा** (यशायाह 11:4 देखें)। जो सच्चाई वह बोलता है वे दुष्ट को नाश करती है (देखें प्रकाशितवाक्य 1:16)।

यह भी विचार सामने आता है कि इस पुरुष पर विजय आसानी से होगी। मसीह को उसके विरुद्ध नहीं लड़ना होगा; वह मात्र उसको भूला देने के लिए बोलेगा। वह इस दुष्ट को मारेगा या "अराजकता के पुरुष" को हानिरहित या शक्तिहीन कर देगा।

अपने आगमन पर मसीह की उपस्थिति तेजस्विता और महिमा के द्वारा दिखाई देगी। "उपस्थिति" शब्द ἐπιφάνεια (*इपिफानेइया*) से है और "आना" παρουσία (*पारौसिया*) का एक अन्य उदाहरण है। मैकॉर्ड के द्वारा (*इपिफानेइया*) का अनुवाद तेजस्विता किया गया है।[12] शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है, "तेजस्वी"।[13] (*इपिफानेइया* के प्रयोग की तुलना मत्ती 24:27; 1 तीमुथियुस 6:14; 2 तीमुथियुस 1:10 के साथ करें।)

यीशु की "उपस्थिति विरोधी को निष्क्रिय कर देगी।"[14] चाहे कितनी भी सामर्थी और होशियार दुष्टता, इस "पुरुष" में शारीरिक रूप में दिए, प्रभु इसे पराजित करेगा यहाँ तक कि मूसा और हारून के कार्यों से भी बढ़कर जिन्होंने यन्नेस और यम्ब्रेस को पछाड़ा था जब हारून के सर्प ने उन दो जादूगरों के सर्पों को निगल लिया था (निर्गमन 7:6–13; 2 तीमुथियुस 3:8)।

पौलुस ने अब उन घटनाओं के क्रम को पूरा किया जो बता रहा था। पहली, वह व्यक्ति या शक्ति जो रोकती है दूर की जाएगी। दूसरी, "अराजकता का पुरुष" प्रकट हो जाएगा। तीसरी, मसीह दूसरी बार आएगा और "अराजकता के पुरुष" का नाश करेगा और यहाँ संसार की चीजों को समेटेगा।

भले ही पौलुस ने ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा, ऐसा प्रतीत होता है कि इन में से प्रत्येक घटना एक के बाद एक तेजी से होगी एक बार जब पहली घटना हो लेगी। विनाश की व्याख्या करने के बाद, पौलुस उन्हीं विवरणों की ओर मुड़ता है इस पुरुष की प्रवृत्ति कैसे प्रकट होगी।

आयत 9. वह "अधर्मी," प्रभु की तरह ही, उसका **आना होगा** (παρουσία, *पारौसिया*)। दोनों के आने के लिए एक ही यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है और अनोखी घटना का वर्णन करता है। यदि एक को यहाँ पर दुष्ट व्यक्तित्व के रूप में दर्शाया गया है, तो यह दुष्ट की शक्तियों की कुछ पल की वास्तविक विजय का उल्लेख हो सकता है। अराजकता का आना **शैतान की क्रियाओं के अनुरूप होगा**। जैसा कि पहले ही देखा गया है, इसका अर्थ है कि पौलुस जो कुछ बता रहा था वह स्वयं शैतान नहीं था, परन्तु "अराजकता के पुरुष" के शैतान के अनुरूप कार्य थे। यह युद्ध के उसी पक्ष में है और शैतान के द्वारा सशक्त किया गया है।

और अधिक स्पष्ट रूप से, उसका कार्य **सब प्रकार की सामर्थ्य और चिन्ह और झूठे आश्चर्यकर्म दिखाएगा**। "सामर्थ्य," "चिन्ह" और अनोखे कार्य यीशु और वे जो उसके प्रेरित हैं उनके कार्यों को दर्शाने के लिए प्रयोग किए गए शब्द हैं (प्रेरितों के काम 2:22; इब्रानियों 2:4 के साथ तुलना करें)। "सामर्थ्य" ("अनोखे कार्य"; NIV) यह अलौकिक शक्ति पर जोर देती है जो इसे क्रियाशील बनाता है; "चिन्ह" उनके गुणों की ओर संकेत करते हैं जो कि अपनी बजाय कुछ और गहरी बात की ओर ध्यान दिला रहे हैं; और "अनोखे कार्य" इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाते हैं कि मनुष्य उनका व्याख्यान नहीं कर सकता। परन्तु, "अराजकता के पुरुष" के सभी अनोखे कार्य "झूठे" या "बनावटी" हैं (RSV)।

क्या इसका अर्थ है कि वे किसी भी तरह से वास्तव में अनोखे कार्य नहीं हैं वे मात्र इस तरह दिखाई देते हैं? NIV और RSV अनुवादक प्रत्यक्ष रूप से ऐसा ही सोचते हैं। यूनानी भाषा शाब्दिक रूप से कहती है "सारी सामर्थ्य और चिन्ह और झूठ के अनोखे कार्य" यहाँ तीन शब्द प्रयोग किए गए हैं δύναμις (*डुनामिस*, "सामर्थ्य"), σημεῖον (*सेमिऑन*, "चिन्ह") और τέρας ψεῦδους

(*टेरेस सिओडौस*, "झूठ के अनोखे कार्य")। मौरिस ने इसकी इस तरह से व्याख्या की है: "विचार यह नहीं है कि आश्चर्यकर्म नकली हैं ... इसलिए वहाँ कोई वास्तविक आश्चर्यकर्म नहीं है। उनकी वास्तविकता स्वीकार की गई है (क्या शैतान कम करेगा?)। पौलुस जो दृढ़तपूर्वक कह रहा है वह यह है कि वे झूठ की आत्मा में गढ़े गए हैं।"[15]

नर्डोनी का इतालवी अनुवाद मौरिस के साथ सहमत होता प्रतीत होता है परन्तु मसीह और उसके शिष्यों के द्वारा किए गए चिन्ह और अनोखे कार्य और वह जो शैतान ओर उसके सहकर्मियों के द्वारा किए गए उनमें कुछ भिन्नता है मत्ती 24:24 के अनुसार सम्भव दिखाई देते हैं। चुने हुओं को (जो निष्ठा से सच्चाई की चाह करते हैं) धोखा देना सम्भव नहीं है; परन्तु वे जो निष्ठावान नहीं हैं वे इस तरह के कार्यों से धोखा खा जाएँगे (देखें आयत 10)।[16] इसलिए, मौरिस के विपरीत, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शैतान के द्वारा प्रयोग किए गए झूठ के चिन्हों के आधार पर निष्ठावान मसीहियों के द्वारा भिन्नता जान ली जाएगी। अन्य कौन से आधार से भिन्नता होगी?

आगे चलकर, यदि "वह अधर्मी" को मसीही काल में वास्तविक अनोखे कार्यों को करने दिया गया, तो परमेश्वर भी अपनी अनोखी शक्तियों को फिर से दिखाएगा। परन्तु, नए नियम में परमेश्वर का फिर से अनोखे कार्यों के प्रयोग करने का कोई संकेत नहीं मिलता है। यह तथ्य इस निष्कर्ष की ओर भी मुड़ जाता है कि ये "अचम्भे काम" नकली "आश्चर्यकर्मों" या छल के अप्रामाणिक कृत्य होने के अर्थ में "बनावटी" हैं।

किन "झूठे" अनोखे कार्यों का वर्णन किया गया है? सम्भवतः ऐसों को "फेथ हीलर्स" करके दिखाने वाले कहा गया है। निश्चय ही जब हम इस तरह के अनोखे कार्यों को मसीह के और उसके प्रेरितों के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के साथ तुलना करते हैं तो भिन्नता स्पष्ट है, जैसे यह शमौन के आश्चर्यकर्मों के विषय फिलिप्पुस के साथ तुलना की गई है (प्रेरितों के काम 8:9–19)। शमौन की शक्ति तब तक अच्छी दिखाई दी जब तक कि फिलिप्पुस में परमेश्वर की सामर्थ्य के साथ तुलना नहीं की गई। पौलुस ने इसका वर्णन करने के अन्य तरीकों को जारी रखा जो अराजकता का पुरुष स्वयं दिखाएगा।

आयत 10. वह अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ आएगा, वह हर प्रकार की दुष्ट कल्पनीय युक्तियों का प्रयोग करेगा। लोगों को धोखा देना उसका लक्ष्य होगा। अपने लक्ष्य को पूरा करने और बहुत से अनुयायियों को पाने के लिए वह धोखा देने के लिए अपनी युक्तियों को प्रयोग करेगा, परन्तु किस वर्ग के लोग उसके अनुयायी होंगे? पौलुस उनका वर्णन **नाश होनेवालों के रूप में** करता है। RSV "वह जिनको नाश होना है।" नाश होना या नष्ट होना दुष्टों के लिए "अनन्त विनाश है।" (1:9)। ये वे लोग हैं जो पहले ही से "अनन्त विनाश" के पथ पर चलते हैं।

पौलुस ने यूनानी भाषा का वर्तमान कालिक विशेषण τοῖς ἀπολλυμένοις (*टोइस अपोलुमिनोइस*) का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है "वे जो नाश हो रहे हैं।"[17] इसका इस तरह से भी अनुवाद किया जा सकता है "नाश होने वाले।"

स्वाभाविक प्रश्न यह होगा : शैतान उन लोगों को धोखा क्यों देना चाहेगा जो पहले ही से विनाश के पथ पर हैं? प्रत्यक्ष रूप से वह उनको भ्रम और पाप की गहराई में ले जाना चाहता है ताकि उनको शैतान के पंजे से निकलना कठिन हो जाए। इसके अतिरिक्त, सम्भवतः वह चाहता है जैसे केल्सी ने सुझाव दिया, "अपने सक्रिय और युद्धकारी विद्रोह में उन्हें [सक्रिय कार्यकर्ताओं के रूप में] शामिल करने के लिए।"[18]

इसका वास्तविक कारण क्या है कि यह लोग विनाश की ओर जा रहे हैं? पौलुस ने कहा यह इसलिए है क्योंकि उन्होंने **सत्य के प्रेम से** इनकार किया। किसी हद तक इन लोगों ने प्रेम का तिरस्कार किया और इसलिए सत्य को स्वीकार किया। उन्होंने जानबूझकर उसका तिरस्कार किया जिसे वह जानते थे कि सत्य है, सुसमाचार या मसीह का सुसमाचार (इफिसियों 4:21 के साथ तुलना करें)। "यह उनके हृदय की प्रवृत्ति को अभिव्यक्त करता है ... जो कि अनन्त परिणामों के साथ लदा हुआ है।"[19] जो सत्य से प्रेम करता है **बचाया** या हमेशा के लिए परमेश्वर के साथ मेलमिलाप किया जा सकता है, परन्तु यह जो धोखा खा गए हैं उन्होंने जानबूझकर विपरीत दिशा का चयन किया, परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करने से दूर हो गए। यह इस तरह का व्यक्ति है जिसे अगला आयत सम्बोधित करता है।

आयत 11. इस कारण आयत 10 का उल्लेख करता है क्योंकि उन्होंने प्रेम और सत्य को स्वीकार न करने का निर्णय लिया। इसलिए, **परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा**। "उनपर भेजेगा" यह "वर्तमान काल का भविष्यवादी (नबूवत के रूप में) है जब अराजक प्रकट होगा।"[20]

किस अभिप्राय से परमेश्वर इस प्रभाव को भेजेगा? इस अभिप्राय से कि वह जो समस्त संसार के घटनाचक्र को नियंत्रित करता और जो यह ठहराता है कि कोई व्यक्ति यदि मसीह और सत्य के विरुद्ध निर्णय लेता है टो उसके पास जाने का एक ही मार्ग बचता है – शैतान और भ्रम का मार्ग। स्वयं को उस सिद्धांत का जिम्मेवार मानते हुए, जो कहता है कि सत्य का इनकार करनेवाले झूठ का अनुसरण करते हैं, यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर अविश्वासी के पास "बड़े भ्रम" (RSV) को भेजता है ताकि वह इस झूठ पर विश्वास करे या स्वीकार करे कि "पाप का पुरुष" ही ईश्वर है (आयत 4)।

समस्या यह है वह परमेश्वर जो भला है और सम्पूर्ण सत्य का स्रोत है, वह कैसे किसी "भ्रामक प्रभाव" को भेज सकता है ताकि कुछ लोग झूठ पर विश्वास करें जो कि परमेश्वर के स्वभाविक कार्य से अलग होगा। जब कोई व्यक्ति मरने

के लिए ऊँची चट्टान से कूदता है तो क्या परमेश्वर उस पर मृत्यु भेजता है या वह व्यक्ति स्वयं अपने को मारता है? पौलुस के दृष्टिकोण के अनुसार, परमेश्वर ऐसा करता है क्योंकि उसने गुरुत्वाकर्षण के नियम को ठहराया है। निस्संदेह इस बात को स्मरण रखने की जरूरत है कि परमेश्वर गुरुत्वाकर्षण के नियम के द्वारा किसी ऐसे पर मृत्यु नहीं भेजता जिसने यह निर्णय नहीं किया है कि वह अपने जीवन से प्रेम नहीं करता। जीवन के विरुद्ध उसने पहले ही से निर्णय कर लिया है।

इस तरह से, परमेश्वर कुछ लोगों पर भ्रम और झूठ की धारणा को भेजता है। परमेश्वर के नियम में, यह अव्यक्त है कि कुछ लोग झूठ को स्वीकार करेंगे और नाश हो जाएँगे और परमेश्वर उन पर इस विनाश को "भेजता" है। इसके अतिरिक्त वह ऐसा उन्हीं लोगों के साथ करता है जो पहले ही सत्य को लेने से इनकार कर चुके हैं। क्योंकि उन्होंने सत्य के मार्ग का इनकार किया है, बातों के स्वभाव में, यही एक मात्र अन्य मार्ग है जिस पर वे चल सकते हैं : धोखा खाना और झूठ पर विश्वास करना और नाश होना।

उस दृष्टिकोण से इस विषय पर विचार करना, परमेश्वर ने फिरौन के हृदय को भी कठोर किया था (निर्गमन 9:12)। परमेश्वर ऐसा उन्हीं लोगों के लिए करता है जो सत्य के विरुद्ध निर्णय करते हैं (आयत 10); इस तरह से, अन्य भाव में, एक व्यक्ति स्वयं का जिम्मेदार है। वास्तव में, बाइबल भी कहती है कि फिरौन ने अपने हृदय को कठोर किया (निर्गमन 8:32)। 2 थिस्सलुनीकियों 2 में चर्चा में जो व्यक्ति थे जैसा कि वे पहले ही देख चुके थे, उन्होंने सत्य का इनकार करने का निर्णय लिया क्योंकि वे इसे पसंद नहीं करते थे (आयत 10)। इसलिए, उन्होंने उस झूठ को स्वीकार कर लिया कि "अराजकता का पुरुष" परमेश्वर है (आयत 4)।

आयत 12. एक बार जब उन लोगों ने "सत्य से प्रेम न करने" का निर्णय कर लिया, परमेश्वर ने व्यवस्था के द्वारा स्थापित कर दिया है, उनको आगे "भेजता" है और अधिक आगे झूठ और विनाश के पथ पर सत्य और उद्धार के अलावा मात्र एक ही मार्ग – **ताकि उन सब का न्याय हो** या उस महान और अन्तिम पुस्तकें खोले जाने पर अपराधी घोषित किए जाएँ। आगे चलकर यह कदम इसलिए उठाया जाना था क्योंकि उन्होंने **सत्य पर विश्वास नहीं किया** और जब उन पर सुसमाचार प्रकट किया गया उन्होंने इसे झूठ मानकर इसका इनकार किया (आयत 10)। इन अविश्वासियों का "न्याय" होगा, जो कि यूनानी शब्द κρίνω (*क्रिनो*) से है, 1:5 में प्रयोग की गई संज्ञा से मेल खाता है।[21] पौलुस ने पुनः पुष्टि की कि इसका वास्तविक कारण था वे **अधर्म से प्रसन्न हुए,** या "दुष्टता से प्रसन्न थे" (RSV)। "सत्य से प्रेम नहीं किया" वाक्य की तुलना आयत 10 के साथ करें, धर्मी जन जो "यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है" (भजन संहिता 1:2)।

आभार और उपदेश (2:13–15)

[13]हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, [14]जिस के लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो। [15]इसलिये हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो।

आयत 13. परन्तु हमें तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना [क्योंकि यह हमारा कर्तव्य है] **चाहिए।** परमेश्वर ने मसीह के द्वारा स्वयं उनके साथ मेलमिलाप किया था, ऐसा करने से उसने अपने अन्य लोगों जैसे पौलुस के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध सम्भव बना दिए (1:3 पर चर्चा को देखें)। निश्चय ही हमें अपने भाइयों के भी धन्यवादी होना चाहिए। जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों 1:4 में देखा गया है **हे भाइयो** प्रिय शब्द जिसे पौलुस ने अक्सर प्रयोग किया – थिस्सलुनीकियों की दोनों पत्रियों में बीस बार से भी अधिक।[22] क्या हमें और भी अधिक इसे प्रयोग नहीं करना चाहिए?

सब लोग परमेश्वर को प्रिय हैं (यूहन्ना 3:16), परन्तु मात्र मसीही ही हैं जिन्होंने परमेश्वर के प्रेम के संदेश को ग्रहण किया, वे विशेष भाव में "परमेश्वर के प्रिय" हैं (देखें यहूदा 21)। उनका मसीह के द्वारा मेलमिलाप हुआ है (2 कुरिन्थियों 5:19)। पौलुस ने यह कहते हुए कहना जारी रखा कि उसका उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना उसका कर्तव्य है **क्योंकि परमेश्वर ने उनको आदि से ही उद्धार के लिए चुन लिया है।** कुछ प्राचीन हस्तलेखों में हम पढ़ते है "आदि से" की बजाय "परमेश्वर ने तुम्हें अपने पहले फल के रूप में चुन लिया है" (देखें NEB फुटनोट)। परन्तु मौरिस, "आदि से" का पक्षधर है। उसने लिखाः

> भिन्न भिन्न संस्करण में ἀπαρξήν (*एपारक्सेन*), कुछ व्याख्याकारों के द्वारा "पहले फल के रूप में" इस भाव का पक्ष किया गया है। अन्य को अभी आना है इसके विपरीत अर्थ पहला होगा ... दोनों ही संस्करणों के पास हस्तलेखों का समर्थन है। प्रतिलेखन सम्भावना ("आदि से") पक्ष में है, क्योंकि यह पौलुस की विशिष्ट अभिव्यक्ति नहीं है।[23]

यदि हम "आदि से" संस्करण का चयन करते हैं तो हमें यह पूछना चाहिए, "किस के आदि से?" क्या यह आरम्भ पौलुस की सेवा का है, या परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव का आरम्भ है? यदि "आदि से" सही संस्करण है तो पौलुस

की सेवा का आरम्भ सही हो सकता है। परन्तु "आदि से" सही समाधान नहीं प्रतीत होता दिखाई देता, अधिकांश संस्करण की सम्भावना है "अपने पहले फल के रूप में"। वास्तव में यूबीएस "उसके पहले फल के रूप में" का समर्थन करते हुए उसे बी श्रेणी में रखता है।[24] इस संस्करण के साथ "पहले फल" का अर्थ होगा मकिदुनिया में वे पहले व्यक्ति जो मसीही बने। यदि ऐसा है तो परमेश्वर पहले विश्वासी कब "चुनेगा"?

पौलुस के लेखन में अन्य बाइबल अंश के द्वारा जाँच जो उसी विषय के साथ मेल खाता है, यह सम्भवतः परमेश्वर के उद्देश्य और मनुष्य के उद्धार सम्बन्धी योजना का आरम्भ होगा। इस विचार की तुलना इफिसियों 1:4 से करें (NIV), जहाँ पौलुस ने कहा, "उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम ... पवित्र हों" (इफिसियों 3:5–9; 1 कुरिन्थियों 2:7 भी देखें) इफिसियों 1:4 इस तथ्य को रेखांकित करता है कि परमेश्वर ने मसीहियों को चुना "इस जगत की उत्पत्ति से पहले" इफिसियों 3:5–9 इस तथ्य पर बल देता है कि अन्यजाति भी इस चुने हुए समूह में शामिल है। परमेश्वर ने मनुष्य के पतन और वे जो आज्ञापालन करेंगे उनको छुड़ाने के लिए अपने पुत्र के देने की जरूरत दोनों ही को पहले ही से भांप लिया था। इसलिए, भविष्य को पहले ही से देख लेने की अनोखी शक्ति के साथ उसने कुछ लोगों को "उद्धार पाने के लिए" "चुना"।

यह निस्संदेह, मनुष्य के चयन पर प्रश्न उठाता है। यदि परमेश्वर पहले ही देखता है और पहले ही से चुनता है, क्या हमारे स्वतंत्र इच्छा के भाग के प्रयोग को अलग नहीं करता है? क्या हमारा गंतव्य कि हम उद्धार पाएँगे या नाश होंगे निर्धारित नहीं है, भले ही हम कोई भी चुनाव करें? ऐसा बिलकुल नहीं है। परमेश्वर व्यक्तियों को नहीं चुनता है; वह मात्र लोगों के व्यापक वर्गों को "चुनता" है। यहाँ तक कि पुराने नियम में भी, परमेश्वर के वास्तविक चुने हुए वही लोग थे जिन्होंने नबियों के द्वारा दिए गए परमेश्वर के वचन की आज्ञा का पालन किया (व्यवस्थाविवरण 18:14–20)। निश्चय ही यह सबसे महान नबी यीशु मसीह के विषय भी उतना ही सत्य था (इब्रानियों 5:8, 9), जिसे अपने अनुयायियों में अन्यजातियों को भी जोड़ना था जो परमेश्वर की आज्ञा पालन करेंगे (देखें रोमियों 9:23–26 जो होशे 1:10; 2:23 का हवाला देता है)। वास्तव में यह कहा गया है कि परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले, उनको बचाने की योजना की जो मसीह का पालन करेंगे और जो उसका पालन नहीं करेंगे उनको दण्ड देने की योजना की है। प्रत्येक व्यक्ति यह निर्णय करने के लिए स्वतन्त्र है कि वह स्वयं को किस वर्ग में रखेगा। इसलिए, परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले इन दो समूहों को चुन लिया है और हमें इन दो के बीच रख दिया है कि हम निर्णय करें हमें किस राह पर जाना है। हम किस राह पर जाएँगे? यह हमारे चुनाव पर निर्भर है।

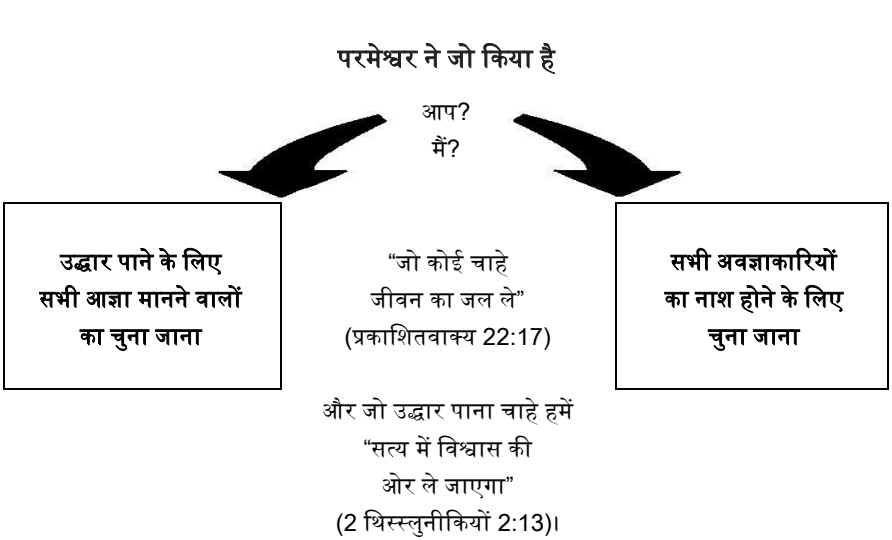

परमेश्वर ने जो किया है

आप?
मैं?

उद्धार पाने के लिए सभी आज्ञा मानने वालों का चुना जाना	"जो कोई चाहे जीवन का जल ले" (प्रकाशितवाक्य 22:17)	**सभी अवज्ञाकारियों का नाश होने के लिए चुना जाना**

और जो उद्धार पाना चाहे हमें
"सत्य में विश्वास की
ओर ले जाएगा"
(2 थिस्स्लुनीकियों 2:13)।

परमेश्वर ने इन थिस्सलुनीके के विश्वासियों को "उद्धार के लिए" चुना क्योंकि उन्होंने सत्य का पालन किया और इसलिए स्वयं को उस वर्ग में रखा जिनको परमेश्वर ने उद्धार पाने के लिए चुना है। उन्होंने सत्य को पसंद किया जब उन्होंने इसे सुना, उन अनुयायियों के बिलकुल विपरीत वे "अधर्मी" जिसने "सत्य के प्रेम का" इनकार किया (आयत 8, 10)। पौलुस ने अपनी बात को जारी रखा कि ये थिस्सलुनीके के लोग दो बातों **के द्वारा** बचाए गए। पहली, **ईश्वरीय पक्ष पर पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र किए जाने से** और दूसरी **मानवीय पक्ष से सत्य पर विश्वास करके**। "पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र" होने से, पौलुस उस कार्य को बता रहा था जो पवित्र आत्मा वचन के द्वारा करता है। यीशु ने प्रार्थना की, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17), और पौलुस ने हमें बताया कि "आत्मा की तलवार ... परमेश्वर का वचन है" (इफिसियों 6:17)। इन बाइबल अंशों से यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन के द्वारा, शुद्ध करता है या पवित्र बनाता है। यह शुद्ध किया जाना आरम्भ में ही मन परिवर्तन के समय (1 कुरिन्थियों 1:2) होता है और फिर यह निरन्तर पवित्र आत्मा द्वारा मसीहियों के जीवनों में मसीहियों के जीवनों में अन्तिम उद्धार का कार्य करता जाता है (1 यूहन्ना 1:7 की तुलना करें 1 पतरस 1:2 के साथ)। यह कार्य ईश्वरीय पक्ष का है। मानवीय पक्ष "सत्य में विश्वास" करना है। "पाप के पुरुष" के झूठ (आयत 4) पर विश्वास करने की बजाय, थिस्सलुनीके के इन विश्वासियों ने परमेश्वर के सत्य पर विश्वास किया, जिसके अनुसार यीशु प्रभु है, न कि "पाप का पुरुष"। यीशु ने वचन दिया कि इस सत्य पर विश्वास करने के द्वारा पाप से स्वतन्त्र होकर

उद्धार पाया जा सकता है (यूहन्ना 8:32)।

आयत 14. उसने पिता परमेश्वर का उल्लेख किया है जिसका वर्णन आयत 13 में किया गया है। पिता परमेश्वर ने थिस्सलुनीकियों को अपने आचरण का अनुसरण करने के लिए **बुलाया** या चुना (प्रेरितों के काम 17:1–4)। "ऊपर 'चुने हुए' की तरह, 'बुलाए हुए'" यह καλέω (*कालेओ*) से है, "यह भूत काल में है जो एकल कार्य को दर्शा रहा है। वर्तमानकाल के विपरीत, 'कालेथ' 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 5:24."[25] वे हमारे **सुसमाचार के द्वारा** बुलाए गए। पौलुस अपने विषय और अपने सहकर्मियों के विषय कह सकता था कि "सुसमाचार" या खुशखबरी उनकी है इस भाव में कि उन्होंने इसे लिया और इसका प्रचार करने की जिम्मेदारी ली है।

इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस समय परमेश्वर का मसीही होने के लिए बुलाने का तरीका स्वर्ग से सीधे प्रकाशन के द्वारा नहीं है, परन्तु सुसमाचार के संदेश के प्रचार के द्वारा है। वह संदेश तब हमारे अन्दर कार्यकारी बन जाता है जब हम इसका पालन करते हैं।

कारण कि परमेश्वर ने उन्हें सुसमाचार के माध्यम से बुलाया यह इसलिए कि वे **हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा** को **प्राप्त** (या उसमें सहभागिता) करें। एक भाव में, मसीही पहले ही से इस जगत में यीशु की "महिमा," आदर या प्रताप में सहभागी है। हम "उसी तेजस्वी रूप में अंश- अंश कर के बदलते जाते हैं" (2 कुरिन्थियों 3:18)। इससे महान भाव में हम "महिमा को प्राप्त" करेंगे जब वह दोबारा आएगा। रोमियों 8:18 कहता है "वह महिमा जो हम पर प्रगट होने वाली है" आगे वह कहता है "इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं" (NIV)। इस बाइबल अंश के बाद के भाग में, पौलुस रची हुई वस्तुओं के विषय कहता चला गया "विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी" (रोमियों 8:21)। कुलुस्सियों 3:4 और फिलिप्पियों 3:21 वर्णन करता है "महिमा की देह" (NIV) हमारे पास होगी। आयत 14 में, यीशु को "हमारा" प्रभु यीशु मसीह कहा गया है, यह उसके और मसीहियों के बीच में घनिष्ठ सम्बन्ध का संकेत करता है।

आयत 15. इसलिए उस तथ्य का उल्लेख करता है क्योंकि उनके पास यह "महिमा" है कि आगे की ओर देखें (आयत 14 को देखो), उनको **स्थिर रहना** है और "शीघ्र घबराना" नहीं है (आयत 2) या न **उन बातों से** मुड़ने से इनकार करना है **जो उन्हें वचन या पत्री के द्वारा मिली** हैं। उन्हें उन शिक्षाओं को थामे रहना था जो पौलुस और उसके सहकर्मियों से उन्होंने "ली थीं" (NIV)। यह बातें उनको या तो "मौखिक रूप से" दी गई थीं जब पौलुस थिस्सलुनीके में था (प्रेरितों के काम 17:1) या "पत्री" के द्वारा जब पौलुस ने कुछ महीने पहले थिस्सलुनीकियों को अपना पहला पत्र लिखा था।

"बातें" या "शिक्षाएँ" यूनानी शब्द παράδοσις (*पैराडोसिस*) है, जिसका अर्थ है "सौंपना"[26] विचार यह है कि किसी बात को एक वंश से दूसरे वंश को सौंपना या देना। डेविड जे. विलियमस ने कहा हैः

> वचन का महत्व इतना ही नहीं है कि यह उस विशेष मसीही शिक्षा की ओर ध्यान दिलाता है, जो एक पीढी से अगली पीढी को आगे सौंपी जाती है (1 कुरिन्थियों 11:23; 15:3), बल्कि यह भी है कि कलीसिया के लिए उसकी शिक्षा आधिकारिक है और सिखाने वाले या शिक्षक को इसे बदलने का कोई अधिकार नहीं है।[27]

यह शब्द अपने आप में, न ही बुरा है न ही अच्छा है। क्या यह बातें अच्छी हैं या बुरी हैं यह उस स्रोत पर निर्भर करता है जहाँ से वे विशेष शिक्षा आती है। उदाहरण के लिए, इस बाइबल अंश की बातें (जैसे 3:6 में भी) स्पष्ट रूप से भली है और इसलिए उन्हें सम्भालना है क्योंकि वे परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त प्रेरितों से आती हैं। परन्तु, कुछ "बातें" त्याग दी जानी चाहिए क्योंकि वे परमेश्वर की प्रेरणा रहित मनुष्यों से आती हैं और हमारी आराधना को "व्यर्थ" कर देती हैं (मत्ती 15:1–9)।

बातों को थामे रहना
(2 थिस्सलुनीकियों 2:15)

बातें (=शिक्षाएँ) हैं:

कभी-कभी बुरी	**कभी-कभी भली**
मत्ती 15:2, 3, 6	2 थिस्सलुनीकियों 2:15
(आयत 9 से तुलना करें)	2 थिस्सलुनीकियों 3:6
	1 कुरिन्थियों 11:2
स्रोत	*स्रोत*
मनुष्य	प्रेरितों के द्वारा परमेश्वर
मत्ती 15:9	1 कुरिन्थियों 11:2

कैथोलिक इस बाइबल अंश का हवाला देते हैं (आयत 15) यह प्रमाणित करने के प्रयास में कि आज के मसीहियों को मात्र नया नियम मानने की ही नहीं परन्तु मौखिक शिक्षाओं या बातों को भी मानना है जैसे मरियम की स्वर्ग में कल्पना। परन्तु जैसा ऊपर देखा गया, बातों को कौन बुरा या अच्छा बनाता

है वह स्रोत है। प्रश्न यह है "क्या बात का पता लगाया जा सकता है कि व्यक्ति परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त है या नहीं?" मरियम की कल्पना नहीं हो सकती, इसे स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

51 या 52 ईस्वी में थिस्सलुनीकियों की और हमारी स्थिति में एक मूल अन्तर यह है कि उस समय परमेश्वर का वचन लिखा हुआ था नहीं था। उनको आंशिक रूप से मौखिक शिक्षाओं पर निर्भर रहना पड़ता था। परन्तु 95 ईस्वी तक, जब यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा, वह लेखन कार्य पूरा हो गया था। तब से, सभी "बातें" जो सही स्रोत से आईं अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए व्यक्तियों से वे पवित्रशास्त्र में पाई गईं। इसलिए, शिक्षाओं को थामें रहने का आदेश "मौखिक रूप से" पहुँचाया जाता था, जो आज हम पर लागू नहीं होता है।

थिस्सलुनीकियों के लिए प्रार्थना (2:16, 17)

[16]हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही, और हमारा पिता परमेश्वर, जिसने हम से प्रेम रखा और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है, [17]तुम्हारे मनों में शान्ति दे और तुम्हें हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़ करे।

आयत 16. पौलुस ने थिस्सलुनीके के भाइयों को "दृढ़" रहने के लिए कहा, परन्तु वह जानता था कि यह मात्र उन पर निर्भर नहीं हो सकता। इसलिए उसने प्रार्थना की कि उनको **हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा** सहायता प्राप्त हो अर्थात वह उन्हें व्यक्तिगत रूप से सहायता करे **और हमारे पिता परमेश्वर** के द्वारा जो मसीहियों को "पुत्रों" के समान गोद लेता है (रोमियों 8:12–17)

कुछ लोग इस बात का दावा करते हैं कि पत्री पौलुस की नहीं है, क्योंकि इस बाइबल अंश में परमेश्वर से पहले मसीह का नाम दिया गया है, उदाहरण के लिए 1 थिस्सलुनीकियों 3:11 के विरोधाभास में, जहाँ परमेश्वर पहले लिखा गया है। परन्तु यह भी देखा गया है, क्योंकि पौलुस उनके लिए प्रार्थना कर रहा था और यीशु उनका "मध्यस्थ" है (1 तीमुथियुस 2:5) शब्द का यह क्रम किसी भाव को उत्पन्न करता है। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 13:14 में और गलातियों 1:1 में भी मसीह का नाम पहले दिया।

यह महान पिता जिससे पौलुस प्रार्थना कर रहा था यह वही है जिसने **हमसे प्रेम किया** (देखें यूहन्ना 3:16) और इसलिए **अनुग्रह के द्वारा** या उसकी अनोखी कृपा के द्वारा हमें "अनन्त उत्साह" दिया (NIV)। NASB तसल्ली शब्द देता है, परन्तु "उत्साह" श्रेष्ठ अनुवाद है। यह "उत्साह" हमें कभी नहीं छोड़ता है। यह अनन्त उत्साह होगा, हमारे साथ रहता है, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए। इसके अतिरिक्त पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने हमें **उत्तम आशा** दी

है, वही आशा जिसके विषय पौलुस ने 2:14 में कहा, अर्थात उसकी "महिमा" में सहभागी होने की सम्भावना। तीतुस 2:13 में, पौलुस ने हमें स्मरण करवाया कि "उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें।"

आयत 17. इन भाइयों के लिए पौलुस की प्रार्थना यह थीः परमेश्वर जिसने उन्हें "प्रेम किया" और उन्हें "अनन्त शांति और उत्तम आशा दी" (आयत 16) अब **शान्ति** (παρακαλέω, *पाराकालिओ*) और उनके **हृदयों को सामर्थ्य** (στηρίζω, *स्टेरिज़ो*) देगा।

"हृदय" का अर्थ आंतरिक मनुष्य है। परमेश्वर ने उनको "अनन्त शान्ति दी"; इसलिए, उसने उनको क्षणिक प्रोत्साहन दिया जिसकी उन्हें जरूरत थी। उत्साहित करने का अर्थ है "दिलासा देना" (लतीनी कोर का अर्थ है "हृदय") किस व्यक्ति को "दिलासा" देने का विचार जो निराश हो। "दृढ़ करना" या "स्थापित करना" (RSV) यह किसी व्यक्ति के किसी बात में पुष्टि करने के विचार पर भी जोर देता है। इस मामले में, वह कोई बात हर एक अच्छे काम और वचन हैं।

जॉन स्टॉट ने यह विचार प्रस्तुत कियाः

> प्रेरित की दो प्रार्थनाएँ हैं कि परमेश्वर आपके हृदयों को शान्ति या उत्साह दे : उनको आंतरिक रूप से मजबूत करना, और प्रत्येक भले कार्य में दृढ़ करना (जैसे कि 1 थिस्सलुनीकियों 3:13 में है) और वचन में जो कि आंतरिक सामर्थ्य का बाहरी और खुलेआम प्रकटीकरण है।[28]

इस तरह के उत्साह के साथ, थिस्सलुनीके के विश्वासी प्रत्येक भले काम में अपनी सहभागिता के लिए और अधिक बढ़ते जाएँगे, जैसे निस्सहाय की सहायता करना या बीमार व्यक्ति को देखना, और प्रत्येक भले वचन में जैसे दुखी व्यक्ति को दिलासा देना, भ्रमित व्यक्ति को ताड़ना या अज्ञानी को सिखाना। संक्षेप में, पौलुस कह रहा था कि प्रभु के दूसरे आगमन के विषय को लेकर (आयत 2) परेशान होने की बजाय और व्यर्थ अटकलें लगाने में समय बर्बाद करने की बजाय वे भले कार्य और भले वचन बोलने में पाए जाएँ।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए : "पाप का पुरुष" (2:3–10)

इतिहास बहुत से तानाशाहों की पुष्टि कर सकता है जिन्होंने अपने लोगों को सताया, नरसंहार किया और अन्य लोगों को ताक पर रखकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को बटोरा। इस तरह के व्यवहारों को अराजकता के रूप में समझा गया है, न कि मात्र मसीहियों के द्वारा, परन्तु अंतर्राष्ट्रीय अदालतों के द्वारा भी। इस तरह के अपराधी भयानक कृत्य करना पसंद करते हैं। वे दुष्टता

के सार में समाविष्ट होते हैं। वे कुछ मामलों में "अराजकता के पुरुष" होते हैं।

2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2 में, पौलुस ने "अराजकता के पुरुष" के विषय लिखा। यह वह व्यक्ति है जो "धर्म त्याग का" मुख्य बिन्दु होगा (आयत 3)। अराजकता का पुरुष एक मनुष्य के समान ही होगा जो तख्तापलट कर देश को अपने हाथ में करने का प्रयास करता है। प्रभु यीशु ने झूठे नबियों के आने के विषय नबूवत की (मत्ती 7:15)। पौलुस ने भी शिक्षा विरोधी के विषय नबूवत की (प्रेरितों के काम 20:28–30)। इस अध्ययन में हम सूक्षमता से देखेंगे कि पौलुस ने कैसे इस "अराजकता के पुरुष" का वर्णन किया (आयत 3)।

इस पाप के पुरुष का क्या स्वभाव है? पौलुस ने आयत 7 में लिखा, "क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है।" उसने इस दुष्ट व्यक्ति के स्वभाव का बड़े विवरण के साथ वर्णन किया। पहला, उसने कहा कि यह अराजकता का पुरुष परमेश्वर का विरोध करता है (आयत 4)। वह शैतान के समरूप है, जिसके नाम का अर्थ है "झूठा दोष लगाने वाला" या "निन्दक"। यह पुरुष उन सब बातों का विरोध करेगा जो भली और सही हैं।

दूसरा, यह पाप का पुरुष "स्वयं को ईश्वर या पूज्य से बड़ा कहलाता है" (आयत 4)। परमेश्वर की आराधना करने की बजाय वह चाहता है कि उसी की आराधना की जाए (मत्ती 4:10), अराजकता का पुरुष स्वयं को ऊँचा उठाता है और चाहता है कि उसकी आराधना की जाए। इस कथन में न केवल देवताओं जैसे ज्यूस और जुपीटर को ही शामिल करता है परन्तु वह इसमें यहोवा परमेश्वर को भी शामिल करता है। अराजकता का पुरुष अक्खड़ और अभिमानी है।

तीसरा, पाप का पुरुष "वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को ईश्वर ठहराता है।" (आयत 4)। यूनानी भाषा में मन्दिर के लिए शब्द है ναός (*नाओस*), जो मन्दिर के आंतरिक भाग का संकेत करता है, सारा का सारा भवन नहीं है। यह उसका चित्रण है जो अधिकारिक तौर पर परमेश्वर के स्थान पर शासक के रूप में "सिंहासन" पर बैठना चाहता है। "अपना स्थान लेता है" अधिकारिक राज्याभिषेक समारोह का आरम्भ करता है। "स्वयं को परमेश्वर दर्शाने" का अर्थ है यह दुष्ट पुरुष ऐसा ढोंग करेगा कि यही परमेश्वर है, जिसके पास ईश्वरीय अधिकार है। यह कल्पना यशायाह 13 को याद करवाती है, बाबुल के राजा के अभिमान की निन्दा की नबूवत। जैसा परमेश्वर ने 538 ईसा पूर्व बाबुल के राजा को मादियों के हाथ में किया था, वह इस अराजकता के पुरुष के अभिमान को भी परास्त करेगा।

चौथा, पौलुस ने इस पाप के पुरुष को "विनाश का पुत्र" कहा (आयत 3)। उसका अन्तिम परिणाम विनाश है। जैसे यीशु को धार्मिकता के रूप में चित्रित किया गया है, अराजकता का पुरुष पाप को चित्रित करता है। जब मसीह वापस आएगा। वह इस "अराजकता के पुरुष का नाश करेगा" (आयत 8)।

अराजकता का पुरुष कौन है? क्या स्पष्ट रूप से यह जानना सम्भव है कि यह पुरुष कौन था या है? अराजकता के पुरुष के प्रबल होने की पहचान के चार विचार हैं। वे सभी आत्मपरक हैं।

पहला, कुछ लोग कहते हैं अराजकता का पुरुष रोमन कैथोलिक पोप के वंश से है। प्रसिद्ध प्रैसबिटेरियन टीकाकार एलबर्ट बार्नस ने इस बात पर विश्वास किया (इस के लिए आयत 4 की व्याख्या देखें)। बार्नस की तरह, जे. डब्लयू मैकगार्वे और फिलिप्प वाय. पेंडलटन ने कहा कि यदि पोप का आयत प्रभु यीशु के आने तक इसी तरह से चलता रहा तो यह "विचाराधीन नबूवत के उस भाग को पूरा करेगा।"[29] मैकगर्वे और पेंडलटन ने अपने इस विचार का समर्थन करने के लिए 9 कारण दिए हैं। (1) कैथोलिकवाद का अभिमानी दावे के साथ एक ही अधिकारिक मुखिया है। (2) जैसे पौलुस ने वर्णन किया है पोप धर्म त्याग से ही विकसित हुए। (3) पौलुस के दिनों में धर्म त्याग की सामर्थ्य पर प्रतिबंध लगाया। (4) जब रोम के बिशपों ने स्वयं का आत्मिक रूप से हक जमाया, वे फिर भी राजाओं के सामर्थ्य के द्वारा लोक शक्ति को लेने में बाधित थे। (5) पोप का आयत विकसित हुआ और शक्ति के खाली स्थान को भर दिया जब साम्राज्य पाँचवीं शताब्दी में गिर गया था और तब से यह हो रहा है। (6) पोप अपने उत्तराधिकार के क्रम को बड़े ध्यान से बनाकर रखते हैं। (7) पोप स्वयं को "प्रभु परमेश्वर पोप" कहकर परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा करता है। (8) वह "मन्दिर में बैठता है" इस भाव में वह चर्च पर अधिकार का दावा करता है। (9) वह झूठे चमत्कारों के साथ अपनी सत्यता को प्रमाणित करने का प्रयास करता है (आयत 9 देखें)।[30] मैकगार्वे, पेंडलटोन और बार्नस ने एक स्वीकार्य वास्तविकता बनाई है। परन्तु इस विचार-विमर्श में कुछ कमियाँ हैं।

डेविड लिप्सकोम्ब ने इस अंश के विषय कहा,

> मुझे संदेह है कोई संस्था "पाप का पुरुष" है। एक सिद्धान्त अपने कार्य पर था कि वह परमेश्वर को एक ओर हटाएगा और इसके बजाय अपना सिंहासन स्थापित करेगा। यह विनाश और तबाही की ओर ले जाता है अर्थात इसे विनाश का पुत्र कहा गया है ... रोमन कैथोलिकवाद इस पाप के पुरुष का वह विकास या परिणाम है।[31]

मुझे इस बात का संदेह है कि पोप का क्रम पवित्रशास्त्र में इस व्यक्ति के मानदण्ड के साथ मेल खाता है। पहला, पूर्व-कैथेड्रा कथन के प्रति अचूकता के दावे को लेकर पोप इस में सीमित है, जो कि बहुत थोड़े हैं। दूसरा, यदि अराजकता के इस पुरुष की पहचान 1 यूहन्ना 2:18 के मसीह विरोधी के साथ है तब तो पूर्ण दुष्टता या अराजकता के चिन्ह पोप के साथ मेल नहीं खाते हैं।[32] पोप का आयत यीशु को मसीह के रूप में अंगीकार करता है, जबकि मसीह

विरोधी ऐसा नहीं करता है (1 यूहन्ना 2:22)। पोप ने ऐतिहासिक रूप से बाइबल की सच्चाइयों को कई नैतिक मानदण्डों में बनाकर रखा जैसे गर्भपात। तीसरा, पौलुस ने ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया है जिसका दुष्ट प्रभाव दिखाई देगा और वह मसीह के आने तक दृढ़ और अधिक दृढ़ होता रहेगा। यह इस पुरुष को विनाश की ओर ले जाएगा (आयत 8)। इस पुरुष के धोखे के शीर्षबिन्दु के दौरान यीशु का आना होगा। परन्तु पोप के आयत का शीर्षबिन्दु कब का पीछे रह गया है। आठवीं शताब्दी की तुलना में बारहवीं शताब्दी तक इसकी सामर्थ्य काफी कम हो गई।

दूसरा विचार यह मानता है रोमी सम्राट में से अराजकता का पुरुष होगा। कई सम्राट पहली शताब्दी के आरम्भ में देवताओं के समान समर्पित किए गए और उनकी पूजा की गई। डोमिशियन (81–96 ईस्वी) पहला सम्राट था जिसने ऐसी मांग की कि उसके जीवित रहते हुए खुले आम उसकी पूजा की जाए।[33] नीरो (64 ईस्वी) से आरम्भ होकर कई राजाओं ने विरोध किया (आयत 4) और मसीहियत को सताया। "अग्नि परीक्षा" जिसका पतरस ने 1 पतरस 4:12 में वर्णन किया इन सम्राटों के सताव का चिन्ह था जो कि 60 से 70 ईस्वी के मध्य घटित हुआ।

भले ही इतिहास रोमी सम्राटों के दुष्ट कार्यों का वर्णन करता है, परन्तु यह सम्राट अराजकता का पुरुष नहीं है जैसा पौलुस ने वर्णन किया है। सैकड़ों वर्ष तक रोमी साम्राज्य एक बड़ी शक्ति रहा है और इसने पहली चार शताब्दियों तक कलीसिया को बहुत दुख दिया है। परन्तु साम्राज्य का पाँचवीं शताब्दी में पतन हो गया था और मसीह के आने के समय अराजकता के पुरुष के रूप में मसीह के द्वारा नाश नहीं किया जाएगा (आयत 8)।

तीसरा विचार यह है कि पाप का पुरुष स्वयं शैतान ही है। जॉन वेदर्ले ने लिखा, "पौलुस के कहने का तात्पर्य यह होगा कि मसीह का कार्य अपने दिन तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक कि सब मनुष्यों के सामने यह प्रकट न हो कि परमेश्वर की इच्छा का इनकार जो भी मनुष्य करते हैं उनके पीछे शैतान, अर्थात उस दुष्ट का हाथ है।"[34] वेदर्ले के अनुसार, पाप का पुरुष शैतान का सटीक विवरण है। "शैतान" का अर्थ "विरोध करनेवाला" है और पाप का पुरुष परमेश्वर की कलीसिया का "विरोध" करेगा (आयत 4)। वे लोग जो इस विचार का समर्थन करते हैं यह विश्वास करते हैं कि अन्त के समय के नजदीक आने पर शैतान अपनी ताकत को बड़े युद्ध में दर्शाने के लिए शक्तियों को एकत्र करेगा। पवित्रशास्त्र सिखाता है कि जब मसीह आएगा शैतान का नाश करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:10), तो वह अराजकता के पुरुष का भी नाश करेगा (आयत 8)।

प्रथम दृष्टि में यह विचार अच्छा लगता है। परन्तु आयत 9 अराजकता के पुरुष के विषय बताता है "उसका आना शैतान के कार्य के समान होगा" अन्य

शब्दों में, वह शैतान नहीं है, परन्तु वह है जो शैतान के साथ सहमत है और उसके कार्य शैतान के समान हैं। इस आयत को इस तरह से अनुवाद करने के द्वारा वेदरली ने इस समस्या से कतराकर निकलने का प्रयास किया "अराजकता के पुरुष का आना शैतान के कार्य में प्रत्यक्ष है," परन्तु यह अनुवाद इतना विश्वासप्रद नहीं लगता है। अराजकता का पुरुष शैतान नहीं है। यह वह है जो शैतान के साथ कार्य करता है और परमेश्वर के विरुद्ध है।

चौथी शिक्षा यह है कि अराजकता का पुरुष दुष्ट का मूर्तिमान है। वह वास्तविक मनुष्य बिलकुल नहीं है। विचार यह है कि बाद में मसीही काल में, पौलुस के समय के बाद, दुष्टता अपनी गहनता में बढ़ने लगेगी, मसीह के दूसरे आगमन से तुरंत पहले अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाएगी। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, "... आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे" (1 तीमुथियुस 4:1)। पौलुस ने आगे लिखा कि यह मनुष्य "ब्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी, और सत्य के पहचाननेवाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं" (1 तीमुथियुस 4:3)। यह विवरण दूसरी शताब्दी में गूढ़ ज्ञानियों पर उपयुक्त होने के साथ-साथ रोमन कैथोलिक की अविवाहित जीवन और भोजन नियमों की परम्पराओं पर भी उपयुक्त है। पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:13 में लिखा, "दुष्ट, और बहकानेवाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे।" कुछ पदों के बाद पौलुस ने लिखा, "क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे" (2 तीमुथियुस 4:3)। इन सबको अराजकता के रूप में एक चरम सीमा तक पहुँचना था – दुष्ट की यह सभी शक्तियाँ शैतान के साथ मिलकर कार्य करती हैं – पूर्ण रूप से प्रकट था (आयत 3, 8)।

यह आलंकारिक पुरुष मसीहियत को निगलने का प्रयास करेगा और सच्चे परमेश्वर की आराधना को दबाने का प्रयास करेगा। यह दुष्ट की शक्तियाँ अराजकता के पुरुष में शामिल हैं इसमें झूठे धर्म, नास्तिक शक्तियाँ, भौतिकवाद और धर्म-निरपेक्षता की शक्तियों को जोड़ा जा सकता है। यह मिलकर कार्य करते हैं, ताकि जैसे नूह (मत्ती 24:37) के दिनों में लोग परमेश्वर के विषय बहुत कम जानते थे और यह कि उसने क्या किया है।

ज्यों-ज्यों अन्त नजदीक आता है, बुराई जीतती हुई दिखाई दे सकती है; परन्तु उसी क्षण, मसीह अपने तेजस्वी वापसी में आएगा। वह "महिमा" में "दूतों" (मत्ती 25:31), ललकार और प्रधान दूत के शब्द के साथ और परमेश्वर की तुरही के साथ आएगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। अराजकता के पुरुष के प्रकटीकरण से बढ़कर मसीह का आना अधिक तेजस्वी होगा। मसीह अपनी मुँह

के श्वास से उसे मार डालेगा और उसका अन्त कर देगा (आयत 8), बिना युद्ध किए ही वह उसे आसानी से अनन्त दण्ड में भेज देगा (मत्ती 25:46)।

इस धरती पर हमारे जीवन के दौरान, दुष्टता कभी-कभी अजेय दिखाई देती है। शैतान और उसकी शक्तियाँ कई एक युद्धों को जीत भी लेती हैं। ऐसा लगता है कि स्थिति बद से बदतर हो रही है। परन्तु उस में भी शान्ति रखें मसीह युद्ध जीतेगा। यूहन्ना ने लिखा,

> जब मैं ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी, और वे ऊँचे शब्द से कहते थे, "वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ्य और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है!" फिर मैं ने स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें हैं, यह कहते सुना, "जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेम्ने का धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे!" और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत् किया (प्रकाशितवाक्य 5:11–14)।

मसीह जय प्राप्त करेगा। हम किस की ओर होंगे।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए : वह क्या है "जो उसे अभी रोक रहा है" (2:6, 7)

एक दिन कैम्पेन में जब मैं द्वार खटखटा रहा था, एक छोटे बच्चे ने द्वार खोला और मुझे नमस्कार किया। अचानक ही, एक बड़े कुत्ते ने मुझ पर हमला करने के लिए झपटा मारा। शुक्र है कि वह एक जंजीर में था जिसे उस बच्चे के बड़े भाई ने कसकर पकड़ रखा था। बड़े भाई ने कुत्ते को वैसे ही रोका जैसे जो अराजकता के पुरुष को रोकेगा। जो व्यक्ति अराजकता के पुरुष को रोकेगा उसके विषय में बाइबल क्या सिखाती है?

"वह जो अब रोकनेवाला है ऐसा करेगा" (आयत 7ब)। पौलुस ने लिखा, "क्योंकि अधर्म का भेद अभी भी कार्य करता है।" वह अदृश्य रूप से सक्रिय है। अधर्म के पुरुष का कार्य पौलुस के समय पहले ही से समाज के ढांचे में व्याप्त था।

परन्तु, कोई व्यक्ति या कोई वस्तु रोकने की शक्ति के रूप में कार्य कर रही थी और वह ऐसा करती रहेगी। इस ने इस अराजकता के पुरुष को जंजीर में बांधे रखा है ताकि उसके प्रकट होने के समय में आगे विलम्ब हो।

"जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा" (आयत 7ब)। वाक्य "जब तक दूर न हो जाए" ध्यान देने योग्य है।

रोकने वाला कौन है और किसको दूर किया जाएगा? रोकने वाले की पहचान के विषय हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

उसकी पहचान के विषय को लेकर कुछ आम टिप्पणियों से हमें आरम्भ करने की जरूरत है। वह एक व्यक्ति हो सकता है। आयत 7 रोकने वाले को "वह" के रूप में सम्बोधित करती है। यूनानी भाषा में "वह जो अभी रोकने वाला है" कृदंत ὁ κατέχων (*हो काटेकोन*), से आता है जो कि पुल्लिंग है। आमतौर पर, यह किसी व्यक्ति का संकेत करता है, परन्तु हमेशा नहीं।

रोकने वाले को किसी वस्तु या किसी शक्ति के रूप में भी देखा जा सकता है। आयत 6 कहता है, "जो उसे अभी रोक रहा है।" यहाँ κατέχω (*काटेको*) नपुंसक कृदंत के रूप में प्रयोग किया गया है, यह संकेत कर रहा है कि अव्यक्तिगत वस्तु या शक्ति हो सकती है कि वह कर्ता हो। वह विरोधाभास नहीं है। इसके बजाय। "वह" आयत 7 में एक अचेतन शक्ति का एक साकार रूप है। बाइबल में मानवीकरण रूप का अक्सर प्रयोग किया गया है। सम्भवतः रोकने वाला शाब्दिक रूप से व्यक्ति नहीं परन्तु इसके बजाय कोई वस्तु है।

आगे हमें उसकी स्पष्ट पहचान के साथ व्यवहार करने की जरूरत है। आमतौर पर रोकने वाले की पहचान अराजकता के पुरुष की पहचान के साथ जुड़ी हुई है।

1. वे जो अराजकता के पुरुष के लिए पोप का नाम निर्दिष्ट करते हैं कहते हैं रोकने वाला रोमी सम्राट था।

2. वे जो अराजकता के पुरुष के रूप में सम्राटों का नाम निर्दिष्ट करते हैं वे रोकने वाले को सम्राटों में से कोई उत्तम सम्राट मानते हैं जो सम्राटों की आम नीतियों के विरुद्ध विद्रोह करेगा और साम्राज्य के आरम्भ में ही बुराई को रोकेगा।

3. वे जो शैतान को अराजकता के पुरुष के रूप में निर्दिष्ट करते हैं कहते हैं कि रोकने वाला पवित्र आत्मा है। परन्तु पवित्र आत्मा इन कारणों से रोकने वाला नहीं हो सकता :

रोकने वाला जबरदस्ती, सम्भवतः हिंसा पूर्वक हटाया जाएगा।
शैतान पवित्र आत्मा पर प्रबल नहीं हो सकता।
ऐसा मात्र परमेश्वर ही कर सकता है, परन्तु वह पवित्र आत्मा के विरुद्ध कार्य नहीं करेगा।

4. वे जो पाप के पुरुष को एक दुष्ट व्यक्तित्व मानते हैं वे संसार की कुछ ऐसी सरकारों में रूढ़िवादी और नैतिक बल प्रदान करते हैं जो बुराई के प्रभाव को रोकनेवाले है। रोकने वाला, फिर कोई व्यक्ति और शक्ति होगी जो अभी भी सच्चाई और न्याय के लिए खड़े हैं, तथा पाप के पुरुष को पूर्ण नियन्त्रण लेने से

रोकेंगे। यह व्याख्या रोमी साम्राज्य, उत्तम सम्राट या पवित्र आत्मा के तथ्यों से अधिक उचित प्रतीत होती है।

अनुप्रयोग

यह अध्याय निश्चय ही "व्याख्या है" कि यह पत्री देने के लिए लिखी गई थी। "अधर्म के पुरुष" के आने पर चर्चा इसका मुख्य विषय है। कुछ कारणों से, थिस्सलुनीकियों के मन में यह विचार था कि मसीह का आना निकट है, या प्रभु का आना वर्तमान में था। प्रत्यक्ष स्पष्ट रूप से कुछ लोगों ने अपने काम धंधे छोड़ दिए और आलसी और दूसरों के काम में बाधा डालने वाले बन गए थे। पौलुस ने उन्हें प्रभु के आने की अधिक जानकारी दी, उन्हें बताया कि यह अभी होने वाला नहीं था।

इस अध्याय में उसके कहने का विषय यह है कि प्रभु का दूसरा आगमन तब तक नहीं होगा जब तक कि अराजकता का पुरुष प्रकट न हो जाए। बड़ा धर्मत्याग का एक विस्तृत और भयानक चित्र दिया गया है उसे प्रतीत होना है और अन्त समय तक बने रहना है।

प्रभु यीशु के आने के प्रति हमारा व्यवहार (2:1, 2)

पौलुस ने सिखाया कि प्रभु यीशु का दूसरा आगमन तब तक नहीं होगा जब तक कि अराजकता का पुरुष प्रगट न हो ले (आयत 3)। उसने उनको यह सब बातें बताईं थीं जब वह उनके साथ था (आयत 5), परन्तु वे उनके विषय भ्रमित हो गए थे। सम्भवतः उनमें से कुछ लोग प्रभु के वापस आने की अपने ही खाली समय में बाट जोह रहे थे क्योंकि उनका कीमती समय इस धरती पर नष्ट हो रहा था (3:10–12)।

पौलुस ने उनको प्रभु के आने और उसके साथ होने के विषय में उत्साहित किया। वह अपने वचन पर अड़ा हुआ था, उसने यूनानी शब्द ἐπισυναγωγή (*इपिसुनागागे*) का प्रयोग किया, जिसका अर्थ है "एक साथ एकत्रित करना।" यह दोबारा मात्र एक ही बार इब्रानियों 10:25 में प्रकट होता है, जहाँ पर संतों को आराधना के लिए लगातार एकत्र होने के लिए कहता है।

वह अपना विस्तृत विवरण थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों को मसीह की वापसी सम्बन्धित ज्ञान देते हुए आरम्भ होता है। हमें इसके विषय क्या करना है?

गुण-दोष की दृष्टि से सुनें! थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों ने दूसरे आगमन के विषय दूसरी शिक्षाओं को सुन लिया है। हम पूरी तरह से तो नहीं जानते कि वे क्या कह रहे थे। ऐसा हो सकता है कि वे इस बात पर वाद विवाद कर रहे थे कि "प्रभु का दिन" आ चुका है। पौलुस ने उनसे कहा कि उन्हें वापसी पर

किसी के भी वाद विवाद को जाँच परखकर सुनना था।

वचन का अनुसरण करें। पौलुस चाहता था कि वे इस बात को जाने, प्रभु के आने सम्बन्धी तथ्यों को। तात्पर्य यह है कि वे उसके पत्र को पढ़ें और इसे अपने मन में रखें, क्योंकि इसमें यीशु के आने की सच्चाई विद्यमान है।

सच्चाई में स्थिर रहें। पौलुस ने उनसे अनुरोध किया कि वे दूसरे आगमन सम्बन्धी झूठी शिक्षाओं से अस्थिर या घबरा न जाएँ (आयतें 1, 2)। "किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा भ्रमित न हों।" कुछ लोगों ने ऐसा कहा होगा कि उनके पास पौलुस का लिखा हुआ पत्र है (आयत 2) जो इस बात का संकेत करता है प्रभु का दिन तो आ चुका है। औरों ने कहा होगा कि आत्मा से उन्होंने उसकी वापसी के विषय जाना है।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से विनती की कि मसीह के आने सम्बन्धी झूठी शिक्षाओं से वे अस्थिर न हों या घबराए नहीं। यीशु के आने सम्बन्धी उनको उसकी शिक्षाओं को लेना था और उसकी वापसी सम्बन्धी झूठी शिक्षाओं को रद्द करना था जो उनके पास पहुँची थीं। ऐसा ही हमारे साथ भी है। हमें भी प्रभु यीशु की वापसी सम्बन्धी अवगत होने की जरूरत है और इसके विषय नए नियम की शिक्षाओं में स्थिर रहना है। EC

पाप के पुरुष का आना (2:3–9)

पहली बात जो पौलुस ने की वह थी पाप के पुरुष का वर्णन जो आने वाला था। उसने थिस्सलुनीकियों को बताना चाहा वे जाने कि प्रभु के आने से पहले इस पुरुष का प्रकट होना जरूरी है। मसीह के दूसरे आगमन से पहले, पाप के पुरुष का आना उसकी अपनी ओर से होगा। उसने भाइयों से विनती की कि इस तथ्य के विषय वे किसी के धोखे में न आएँ।

पाप के इस पुरुष को उनके लिए चार दृष्टिकोण से चित्रित किया गया।

व्यवस्था से उसका सम्बन्ध। वह अराजकता का पुरुष है (आयत 3), जो कि दिए गए प्रत्येक नियम की अवहेलना करेगा, आत्मिक और राजनीतिक दोनों की। इसलिए उसे चित्रात्मक नाम दिया गया है, "अराजकता का पुरुष।"

भविष्य से उसका सम्बन्ध। वह अराजकता के भेद से विकसित होगा जो पौलुस के समय में ही कार्य कर रहा था। विनाश का पुत्र होने के नाते (आयत 3), यहूदा की तरह, वह अपने कार्य और नियति में विनाश के द्वारा चिह्नित किया जाएगा। उसका लक्ष्य विनाश है और वह ऐसे किसी भी व्यक्ति को अपने साथ लेगा जो उसका अनुसरण करेगा। पौलुस के समय में, इस पाप के पुरुष को किसी शक्ति या सामर्थ्य के द्वारा रोका गया था (आयत 6)। इसलिए, भविष्य में वह प्रकट होगा और यीशु के आने तक प्रबल होगा और आत्मिक विनाश करेगा। अपनी वापसी पर यीशु अपने मुख की श्वास से उसे मार

डालेगा।

पौलुस ने कहा, अधर्म का भेद लिखने के समय में भी अपने कार्य पर था (आयत 7)। इसलिए इस नबूवत के पूरे होने का आरम्भ पौलुस के समय में प्रकट था। आयत 6 में, पौलुस ने कहा, "अपने ही समय पर" पाप का पुरुष प्रकट होगा। एक ही बात जो उस समय उसे तुरंत प्रकट होने से रोकती थी वह संयम था, जो उस स्थान पर था।

उसका परमेश्वर से सम्बन्ध। वह हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाएगा अपने आपको बड़ा ठहराएगा, परमेश्वर के मन्दिर में अपना स्थान लेगा। वह स्वयं को परमेश्वर घोषित करेगा। वह धार्मिक संदर्भ में आएगा और उसके आने के गम्भीर परिणाम होंगे। बात यह सामने आती है कि वह बड़े धर्म त्याग का मुखिया होगा, इसका आरम्भ पहले ही से पौलुस के सामने प्रत्यक्ष था। जिस धर्म त्याग की वह अगुआई करेगा उससे सारा संसार प्रभावित होगा।

उसका शैतान से सम्बन्ध। वह शैतान के द्वारा सक्रिय और स्थिर किया जाएगा (आयत 9)। जबरदस्त झूठे चिन्हों और आश्चर्यकर्मों के द्वारा चित्रित किया जाएगा (आयत 9), वह बहुत लोगों को अपने पीछे आने के लिए फुसलाएगा। उसके कार्य करने का तरीका दुष्टता, विनाश और भारी धोखा होगा (आयत 10)।

पौलुस के द्वारा दिया गया यह चित्र सम्पूर्ण नए नियम का सबसे अधिक डरावना चित्र है। उचित मसीहियत स्थापित होने के बाद पूरे रोमी साम्राज्य में कई स्थानों पर, कोई आशा करेगा कि शैतान जितनों को हो सके इस पथ पर से भ्रमित करने का प्रयास करे। पाप के पुरुष के व्यक्ति के द्वारा शैतान ने किया और वही वह कर रहा है। EC

क्या प्रेमी परमेश्वर "भटकाने वाली सामर्थ्य" भेज सकता है? (2:11)

एक प्रेमी परमेश्वर कैसे "भटका देने वाली सामर्थ्य" को भेज सकता है? हमें इस बात को याद रखने की जरूरत है कि परमेश्वर ने लोगों को स्वतंत्र इच्छा भी दे रखी है। पुरुष और स्त्रियों में अच्छी और बुरी बातें सिखाने की क्षमता है। वे अच्छे और बुरे दोनों पर भरोसा भी कर सकते हैं। परन्तु निष्ठावान खोजी अच्छे और बुरे के भेद को पहचान लेंगे। जिसने सच्चाई को रद्द किया है वह स्वयं समझता है कि झूठ ही सच्चाई है। परमेश्वर इस तरह के व्यक्ति को भटकने देगा।

परमेश्वर ने लोगों को चुनने के लिए दो मार्ग दिए हैं (मत्ती 7:13, 14)। एक सकरा मार्ग है जो जीवन की ओर ले जाता है और दूसरा चौड़ा मार्ग है जो मृत्यु की ओर ले जाता है। चौड़े मार्ग को चुनने के द्वारा कोई व्यक्ति धोखा खाने का चुनाव करता है। जो धोखा खा गए हैं उनका भी न्याय होगा (आयत 12)।

परमेश्वर नहीं चाहता कि ऐसा हो (2 पतरस 3:9)। फिर भी यदि किसी ने सच्चाई के विरुद्ध जाने का निर्णय कर लिया तो परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को उस पर विश्वास करने देगा जो झूठ है और उसका न्याय होगा (अर्थात दण्ड होगा)।

परमेश्वर चुनाव की स्वतंत्रता देता है परन्तु हमें झूठी शिक्षाओं के प्रति सावधान रहना है, जैसे समलैंगिक मिलाप, विवाह से पूर्व शारीरिक सम्बन्ध और विवाहेतर शारीरिक सम्बन्ध, या मसीह को परमेश्वर की ओर जाने वाला कोई मार्ग समझना इसके बजाय कि मसीह ही परमेश्वर की ओर जाने वाला एकमात्र मार्ग है। परमेश्वर इन शिक्षाओं को फैलने देता है परन्तु सही और गलत की पहचान करना हम पर निर्भर करता है।

अच्छे और बुरे को जानने का उत्तम तरीका है सच्चाई को जानना। परमेश्वर का वचन सच्चाई है (यूहन्ना 17:17)। आइजैक वाट्स ने लिखा,

> युवा अपने हृदय की सुरक्षा कैसे करेंगे,
> अपने जीवनों को पाप से कैसे बचाएंगे?
> तेरा वचन सबसे उत्तम नियम
> विवेक को शुद्ध रखता है।
>
> यह सूर्य के समान है जिसमें तेज प्रकाश है,
> जो सारा दिन अगुआई करता है;
> और रात के खतरों में हमारे मार्ग
> में ज्योति के समान अगुआई करता है।[35] EE

पाप के पुरुष की दुःखद घटना (2:3–9)

हम इस बाइबल अंश के अर्थ को लेकर वाद विवाद कर सकते हैं, हम तर्क वितर्क कर सकते हैं पाप का पुरुष कौन है, परन्तु पौलुस के द्वारा चित्रित की गई भयानक दुःखद घटना पर वाद विवाद या तर्क वितर्क नहीं है।

वह परमेश्वर का विरोध करता है। वह जो आता है वह परमेश्वर का स्थान लेना चाहता है और परमेश्वर के साथ सब प्रकार के युद्ध में पड़ जाता है।

परमेश्वर का विरोध करने के लिए वह अन्य लोगों की अगुआई करता है। वह जो आता है वह जितने अनुयायी अपने लिए एकत्र कर सकता है करेगा। वास्तव में, वह मसीह के अनुयायियों को भी एकत्र करेगा और परमेश्वर का विरोध करने की अगुआई करेगा।

वह दूसरों को धोखा देता है। वह जो आ रहा है वह धूर्तता पर अपने राज्य की स्थापना करेगा। एक ही तरीका है जिससे पाप का पुरुष किसी व्यक्ति को परमेश्वर के विरोध में कर सकता है वह है उसकी धूर्तता। वह उनको बताएगा जो सत्य नहीं है और वह उन्हें झूठ के सामने झुकाएगा।

वह स्वयं को झूठी सामर्थ्य के लिए देता है। पाप के पुरुष का कार्य यह है

वह लोगों को झूठ की सामर्थ्य को स्वीकार करना, उसी के द्वारा जीना और उसी के लिए मरने की ओर ले जाएगा।

वह स्वयं को दुष्टता और अधर्म के लिए देता है। वह जो आ रहा है वह बुराई के प्रति समर्पित, बुराई को अच्छी तरह से जानता है। झूठी सामर्थ्य के द्वारा उसकी दुष्टता सफल होगी।

वह दूसरों को विनाश की ओर ले जाता है। वह जो आ रहा है वह पहले ही से इतना अभिशप्त है कि उसे विनाश के पुत्र का नाम दिया गया है। पौलुस ने आरम्भ से ही पाप के पुरुष के अन्त को चित्रित किया है। "कोई भी नरक में जाने के लिए तैयार नहीं है," हम ऐसा कहते हैं, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से पाप के पुरुष ने ऐसा ही किया।

किसी व्यक्ति के लिए इस तरह के आंदोलन या व्यक्तित्व की कल्पना करना भी कठिन है। पौलुस ने जो चित्रित किया है वह धर्मत्याग है जो दुष्टता और विनाश के हाथों बिका हुआ है। EC

पाप के पुरुष का विनाश (2:3–9)

भले ही इस पाप के पुरुष पर बहुत से प्रश्न उठे हैं, यह तथ्य स्पष्ट हैं : उसे पौलुस के समय के बाद आना है, और वह अन्त होने तक संसार में अपने धोखे के कार्य करता रहेगा।

यीशु के आने पर। मसीह के आने पर उसके द्वारा पाप के पुरुष का नाश किया जाएगा। मसीह अपने बल, शक्ति और मुख की श्वास से उस पर आक्रमण करेगा। पाप का पुरुष यीशु का कट्टर दुश्मन है। वह शैतान नहीं है, परन्तु शैतान के द्वारा सक्रिय किया हुआ और प्रेरणा पाया हुआ है। पाप का पुरुष एक कार है और शैतान ईंधन है। पाप का पुरुष एक कुल्हाड़ी है और शैतान वह हाथ है जो इसे चलाता है।

अपने मुख के श्वास से। यीशु अपने मुख के श्वास से और अपने तेजस्वी आगमन के द्वारा उसे मार डालेगा। यह तथ्य उस सुगमता को दर्शाता है जिससे यीशु उसे नाश करेगा। प्रभु के मुख से निकली हवा की एक फूंक पाप के पुरुष को उड़ा देगी। यीशु का एक शब्द उसे मिटा देगा।

पूर्ण विनाश के साथ। पाप का पुरुष पूरी तरह से विनष्ट हो जाएगा। हम पूर्ण रूप से आश्वस्त हो सकते हैं कि प्रभु अपनी ओर आने वाले किसी विरोध का निपटारा करेगा। वह इस पुरुष को अन्त होने तक इस संसार में रहने देगा, परन्तु उसके आने पर सबसे पहला कार्य उसको मिटाना होगा। वह शैतान और उसके सहकर्मियों को आग की झील में डाल देगा। जो कोई भी पाप के पुरुष के पीछे चलता होगा उसके साथ विनाश में जाएगा। EC

पाप का पुरुष कब आएगा? (2:3–9)

ज्यों ही कोई 2:3–9 को पढ़ता है और इस दुःखद घटना पर विचार करने ही से काँप उठता है, वह आश्चर्य करता है कि क्या पाप का पुरुष अभी संसार में है। इस प्रश्न सम्बन्धी पौलुस चार तथ्य देता है।

पाप का पुरुष उस समय में रोका गया था पौलुस ने लिखा। कुछ सामर्थ्य – सम्भवतः आश्चर्यकर्म काल या रोमी साम्राज्य – ने उसको रोका और उसे उस समय पूर्ण सामर्थ्य के साथ प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी। परन्तु पौलुस ने कहा रोकने वाला कभी भविष्य में हटा लिया जाएगा और "अपने समय" में पाप का पुरुष प्रकट होगा।

अधर्म का भेद पौलुस के दिनों में पहले ही से अपने कार्य पर था। उस बड़े धर्मत्याग का आरम्भ पहले ही से पौलुस पर प्रत्यक्ष था जब उसने थिस्सलुनीकियों को लिखा था।

पाप के पुरुष को भविष्य में पौलुस के मरने के बाद किसी समय प्रकट होना था। उचित समय पर जब रोकने वाली वस्तु हटा ली जाएगी तब पाप का पुरुष प्रकट होगा। अधर्म के भेद ने पौलुस के समय में कार्य करना आरम्भ कर दिया था।

जब पाप का पुरुष प्रकट होगा, वह अन्त समय तक बना रहेगा। पाप का पुरुष संसार में रहेगा और उसका नाश किया जाएगा जब यीशु अन्त समय में आएगा। हम कम से कम आत्मविश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि पाप का पुरुष पौलुस के मरने के बाद आया। इसलिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि अब वह संसार में है। वह कहाँ है? हम यह भी आत्मविश्वास से कह सकते हैं कि पाप के पुरुष का लक्ष्य लोगों को परमेश्वर की सच्चाई से हटाना है। यह कहाँ पर हो रहा है? क्या यह व्यापक सांप्रदायिक ढांचों में नहीं हो रहा है जो अभी विद्यमान हैं, जिसमें पोप का आयत शामिल है और अन्य सभी जो सच्चाई से हटते हैं?

आज इस पाप के मनुष्य में एक बहुत बड़ा युद्ध छिड़ा हुआ है। जिसको भी वह इसमें लेता है वह भी उसके साथ नियति में दुःख उठाएगा। EC

पाप के पुरुष से हमारा छुटकारा (2:10–12)

पाप के पुरुष की सम्भावना की भयानक चित्रण को देखने के बाद और यह सोचने पर कि वह आज इस संसार में है, हम इस प्रश्न के साथ घबरा जाते हैं, "मैं उससे कैसे बच सकता हूँ? मुझे इस बात का कैसे आश्वासन हो सकता है कि वह मुझे अपने कब्जे में नहीं लेता है?" पौलुस उससे छुटकारे का उपाय दर्शाता है।

सच्चाई के प्रति निष्ठावान प्रेम। पाप का पुरुष उन्हीं लोगों को धोखा देगा

जो सच्चाई से प्रेम नहीं करते हैं (आयत 10)। परमेश्वर उन लोगों में भटका देनेवाला सामर्थ्य भेजेगा जो सच्चाई को प्रेम नहीं करते ताकि वे झूठ में विश्वास करें (आयत 11)। रेमण्ड सी. केल्सी ने लिखा, "पाप की बढ़त में एक ऐसा भी समय है जब परमेश्वर मनुष्य को उसकी पसन्द से भिन्न कुछ देता है।"[36]

पौलुस ने रोमियों 1:24, 26, 28 में लोगों का अपने पापों को सुपुर्द करने के सिद्धान्त का वर्णन किया है :

> इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें (रोमियों 1:24)।
>
> इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उस से जो स्वभाव के विरूद्ध है, बदल डाला (रोमियों 1:26)।
>
> और जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें (रोमियों 1:28)।

अन्त में परमेश्वर मनुष्य को उस झूठ में फंसने के लिए दे देता है जिसे वह चाहता और जिसकी वह कामना करता है। वे जो सच्चाई से प्रेम नहीं करते और अधर्म में आनन्दित होते हैं वे पाप के पुरुष के द्वारा फुसलाए जाएँगे। तब वह उन पर अपना नियन्त्रण रखेगा और उनको विनाश में धकेल देगा।

सच्चाई के प्रति निष्ठावान आज्ञाकारिता। निस्संदेह सच्चाई से प्रेम करने में उचित और निष्ठावान आज्ञाकारिता मिली रहती है। सत्य को प्रेम करने के विषय पौलुस ने जो कहा उसके द्वारा इस गुण की विशेषता को बताया गया है। मात्र सत्य की आज्ञाकारिता और उसमें बने रहने से ही पाप के पुरुष से बचा जा सकेगा।

सम्भवतः हम पाप के पुरुष के विषय हर बात न जानते हों कि वह कौन है, परन्तु हम सच्चाई में स्थिर रह सकते है कि जब तक हम सच्चाई से प्रेम करेंगे और इसका पालन करेंगे तो हम उसके द्वारा फंसाए या भरमाए नहीं जाएँगे। हमारे अनुग्रहकारी परमेश्वर ने हम पर अपने प्रेम, पोषण की अनन्त सच्चाई को देने के द्वारा हम पर अपनी दया दर्शाई है और इसके द्वारा जीने से हमें सभी त्रुटियों से बचाता है। EC

सच्चाई को प्रेम न करने की त्रासदी (2:10–12)

जो सच्चाई को प्रेम नहीं करता पौलुस ने उसकी त्रासदी का संकेत दिया है।

जितना कोई अनुभव कर सकता है यह सबसे भयानक है।

वह जो सच्चाई से प्रेम नहीं करता भरमाया जाएगा। जो सच्चाई से प्रेम नहीं करते वह पाप के पुरुष के शिकार हो जाएँगे। धर्म त्याग की बड़ी विधि उसे निगल लेगी और उसे विनाश में ले जाएगी। परमेश्वर की सच्चाई से भरमाया जाना किसी व्यक्ति के लिए सबसे भयानक बात हो सकती है।

वह जो सच्चाई से प्रेम नहीं करता वह झूठ पर विश्वास करता है जैसे कि वही सच्चाई हो। वह केवल भरमाया ही नहीं जाएगा परन्तु वह झूठ पर ऐसे विश्वास करेगा मानो वही सच्चाई है। बुरे कार्यों की स्वाभाविक प्रक्रिया उस पर प्रबल हो जाएगी। पौलुस ने इसे वर्णन किया है जैसे परमेश्वर भेज रहा है "भटका देनेवाली सामर्थ्य।" यह ऐसा मानो परमेश्वर उसे उसके द्वारा चुने भ्रम के हाथ सौंप देता है। जबकि वह अधर्म में चलता है, उसे यह निश्चय होगा कि वह सत्य द्वारा जी रहा है।

वह जो सच्चाई से प्रेम नहीं करता वह अधर्म में प्रसन्न होगा। यह व्यक्ति अधर्म में प्रसन्न होता है मानो वह सच्चाई है। वह उसी में अपना आनन्द पाएगा, इसमें चलने के द्वारा और इसके लिए बलिदान करेगा।

उसका सच्चाई के द्वारा न्याय होगा। परमेश्वर सच्चाई से प्रत्येक व्यक्ति का न्याय करेगा। जब मनुष्यों के पास सच्चाई को स्वीकार करने का अवसर था परन्तु उन्होंने इसे रद्द कर दिया, जिसको उन्होंने रद्द किया वही उनका न्याय करता है।

कोई व्यक्ति इससे बढ़कर निराशा की गर्त में नहीं जा सकता जब वह परमेश्वर की सच्चाई को रद्द करता है। जब वह ऐसा करता है, उसने स्वयं को पाप के मनुष्य, भटका देनेवाली सामर्थ्य और परमेश्वर के न्याय के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया है। उसके लिए मात्र एक ही आशा है कि वह वापस सच्चाई की ओर मुड़े। EC

परमेश्वर के चुने हुए (2:13, 14)

पौलुस थिस्सलुनीकियों का धन्यवाद करने के लिए विवश था। इस आभार के प्रति प्रमुख कारण यह है कि वे परमेश्वर के चुने हुए थे। यह दोहरा चुनाव था अर्थात परमेश्वर ने उन्हें सुसमाचार के निमन्त्रण से चुना और वे परमेश्वर के निमन्त्रण को स्वीकार करने के द्वारा चुने हुओं में चुने गए।

उद्धार के लिए चुने गए। प्रत्येक मसीही उद्धार में सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया है जब वह इसका पालन करता है (आयत 14)। थिस्सलुनीकियों ने सुसमाचार का पालन किया और वे इस उद्धार में आए। वे पाप से बचाए गए पौलुस के आनन्द और धन्यवाद का कारण था।

पवित्रता के लिए चुने गए। जब वे मसीही बने तब उन्होंने पवित्रता प्राप्त

की, और उन्हें इसमें लगातार बढ़ना है। एक प्रचारक के लिए इससे बढ़कर आनन्द की बात नहीं हो सकती जब वह जानता है कि जो मसीही बने वे परमेश्वर के प्रति अधिकाधिक निष्ठावान हो रहे हैं।

सच्चाई पर विश्वास करने के लिए चुने गए। पौलुसने परमेश्वर की बड़ाई की कि थिस्सलुनीके के विश्वासी सच्चाई के द्वारा अलग किए गए थे। परमेश्वर ऐसे लोगों को ढूँढता है जो इस संसार में उसके वचन का आदर करें। वे सच्चाई पर विश्वास करने के लिए चुने गए थे।

मसीह की महिमा के लिए चुने गए। थिस्सलुनीके के नए विश्वासी स्वर्ग की राह, महिमा की मंजिल पर थे। वे एक दिन यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करेंगे और उसकी महिमा में सहभागी होंगे।

यह अनोखी सच्चाई परमेश्वर से चुना जाना कई अन्य सच्चाइयों का संकेत करती है : उद्धार, पवित्रता, सच्चाई पर विश्वास और मसीह की महिमा की ओर अग्रसर होना। उस व्यक्ति पर आनन्दित हों जो मसीही बना है क्योंकि उन्हीं आशीषों की पंक्ति में हैं जिसमें थिस्सलुनीके के विश्वासी थे। EC

अब क्या? (2:15)

अब थिस्सलुनीकियों को क्या करना था? उन्होंने घोर सताव को झेला था, विश्वास और प्रेम में बढ़े थे, और प्रभु के दूसरे आगमन की गहरी समझ तक पहुँच गए थे। अब क्या करना है? जब हम हमारे मसीही जीवन पथ पर सही हैं तो हमें क्या करना है?

विश्वास में स्थिर रहना (आयत 15)। उन्होंने यीशु और परमेश्वर की सच्चाई पर विश्वास किया और उन्हें उस विश्वास पर स्थिर रहना था। उनका विश्वास उनको थामे रखेगा यदि वे उसे थामें रहें।

सच्चाई में स्थिर में रहना। उनको वचन और पत्री के द्वारा प्रेरिताई की शिक्षा दी गई थी (आयत 15)। नया नियम में "शिक्षा" के लिए यूनानी शब्द (παράδοσις, *पैराडोसिस*) कभी-कभी परमेश्वर द्वारा प्रेरणा पाए लेखन और निर्देश के लिए प्रयोग किया गया है, जब अन्य स्थानों पर यह मनुष्यों के आदेशों का उल्लेख करता है (मत्ती 15:2, 3)। इसका अर्थ यह है "वह जो सौंपा गया है।" यहाँ इसको उत्प्रेरित लेखन के रूप में प्रयोग किया गया है। थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने पौलुस से परमेश्वर की प्रेरणा पाए पत्रों को प्राप्त किया था, और उन्होंने उसे पढ़ा था और उसकी शिक्षाओं का पालन किया था।

मसीहियत इतनी सतही है कि बच्चा भी उस पर चल सकता है परन्तु गहरी इतनी कि हाथी इसमें तैर सकता है। हमने इस आयत में मसीही जीवनयापन की सादगी को देखा है। दो बातों का आनन्द लिया गया है : विश्वास को थामे रखना और सच्चाई में बने रहना। EC

सुन्दर आशीष वचन (2:16, 17)

पौलुस ने पाप के पुरुष की चर्चा का विश्वासयोग्य थिस्सलुनीकियों पर सुन्दर आशीष वचन कहने के द्वारा समापन किया।

"तुम्हें अनन्त शान्ति मिले।" वह चाहता था कि वे उस शान्ति को पाएँ जो जीवन को पार करती है और उन्हें अनंतता में ले जाती है। किसी के लिए अच्छे स्वास्थ्य की कामना करना अलग बात है, परन्तु वे अनन्त शान्ति प्राप्त करें अलग बात है। ऐसा हो कि हम अपने भाइयों को अनन्त शान्ति की शुभकामना दें।

"अनुग्रह से तुम्हें उत्तम आशा मिले।" वह चाहता था कि वे वह आशा पाएँ जो परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है। यह आशा वास्तविक और जीवित है, मृतक और निर्जीव नहीं है। ऐसा हो कि हम अपने भाइयों को उस आशा की शुभकामना दें जो अनुग्रह से आती है।

"तुम अच्छे काम और अच्छे वचनों में दृढ़ रहो।" वह चाहता था कि वे अच्छे कामों और अच्छे वचनों में, सही जीवन जीने और सही बात करने में दृढ़ रहें। उसने प्रार्थना की कि मसीह उनके कामों और वचनों पर अपना नियन्त्रण रखे। ऐसा हो कि हमारे भाई सभी अच्छे कामों और अच्छे वचनों में दृढ़ रहें।

यह कामना जैसा कि हम देख सकते हैं इससे उच्च स्तर के मसीही जीवन का परिणाम होगा। पौलुस उच्च और उत्तम बढ़ोतरी की अभिव्यक्ति करता जिसे प्रत्येक मसीही को जानना चाहिए। मसीह में अपने प्रियों के लिए आप कैसे कामना करते हैं? EC

मसीही बुलाहट (2:13–17)

1947 में, नेवादा, मिस्सूरी के पास मेरे पिता जी खेत में काम करवा रहे थे। मेरा बड़ा भाई सैनिक सेवा में जाने के लिए पहले ही से तैयार था और मेरे पिता जी हृदय रोग से पीड़ित थे। इसलिए अधिकांश कार्य की जिम्मेदारी मेरे 19 वर्षीय भाई और मुझ पर आ पड़ी। मैं उस समय 14 वर्ष का था और मुश्किल से हाई स्कूल में था, परन्तु मैं अपने स्कूल के बाद कार्य करता था। तब सरकार ने मेरे 19 वर्षीय भाई को सैनिक सेवा के लिए बुला लिया। वह बुलावा मुझे अच्छी तरह से याद है क्योंकि उससे मुझे एक वर्ष के लिए स्कूल छोड़ना पड़ा और खेती-बाड़ी का सारा काम मेरे कन्धों पर आ पड़ा।

सभी मसीही सेवा के लिए बुलाए गए हैं। पौलुस ने लिखा, "हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगों, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, जिस के लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह

की महिमा को प्राप्त करो।" (आयतें 13, 14)। परमेश्वर ने किसी समय भूतकाल में हमें अपने परिवार का अंश होने के लिए बुलाया है।[37]

थिस्सलुनीके के "भाइयों से प्रभु ने प्रेम किया।" सभी मनुष्यों को परमेश्वर ने प्रेम किया (यूहन्ना 3:16)। मसीही लोग जो निराले ढंग से परमेश्वर के प्रेम में "बुलाए गए" हैं (यहूदा 21)। एक व्यक्ति कैसे परमेश्वर का चुना और या बुलाया हुआ बन जाता है? उसने क्यों सब लोगों को नहीं चुना है? क्या परमेश्वर ने हमें अपने मनमाने ढंग से चुना है। इन तीनों प्रश्नों का उत्तर यह है कि परमेश्वर उन्हें बचाते हैं जो आज्ञापालन करते हैं। इब्रानियों 5:9 कहता है, "वह सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।" इसके बजाय जो मसीह का इनकार करते हैं परमेश्वर के न्याय को सहेंगे। परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में दो समूह हैं : आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी। आप स्वयं को किस समूह में पाते हैं?

थिस्सलुनीके की कलीसिया ने परमेश्वर की आज्ञापालन का निर्णय लिया; इसलिए वे परमेश्वर के प्रेम में थे। इसके कारण से, पौलुस "धन्यवाद देने" के लिए विवश था। परमेश्वर के परिवार के सभी सदस्यों के लिए वह धन्यवाद देगा।

हमारे चुनाव में परमेश्वर की क्या भूमिका है? KJV तथा NASB में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के चुने जाने के समय के विषय में "आरंभ से" आया है। NASB में दी गई पाद-टिप्पणी कहती है, "एक आरंभिक हस्तलिपि में प्रथम फल दिया है।" संभवतः यह सही है। परमेश्वर ने मकिदुनिया के उस इलाके के लिए थिस्सलुनीकियों को अपनी फसल का "प्रथम फल" बनाया था (देखें व्यवस्थाविवरण 26:1–4)।

यह बुलाया जाना कैसे हुआ? चुने हुओं के पावन होने का कुछ भाग "आत्मा के द्वारा" होता है। पावन होने में पवित्र किए जाना सम्मिलित है। "आत्मा" पवित्र आत्मा है जिसमें होकर लिखित वचन प्रकट होता है (यूहन्ना 16:13; देखें यूहन्ना 17:17; इफिसियों 6:17)। सर्वप्रथम हम पावन या पाप से मुक्त बपतिस्मा के समय होते हैं (प्रेरितों 2:38)। पापों से पश्चाताप करने और मसीह के लहू से साफ किए जाने के द्वारा हम लगातार पावन किए जाते हैं (देखें 1 यूहन्ना 1:7)।

जो चुने हुए हैं वे "सत्य में प्रतीति" के द्वारा भी पावन किए जाते हैं। आयत 14 में पौलुस इस सत्य को "हमारा सुसमाचार" कहता है। परमेश्वर ने अपने सन्देश को थिस्सलुनीकियों तक पहुँचाया। परमेश्वर का सन्देश वह "सुसमाचार" था जिसका पौलुस अपनी यात्राओं में प्रचार करता था।

प्रत्येक जो सन्देश को सुनता है उसका आलिंगन नहीं करता है। केवल वही जो उसे स्वीकार करते हैं परिपूर्णता से "बुलाए" हुए कहलाए जा सकते हैं। कुछ ने "सत्य के प्रेम को स्वीकार" नहीं करना चुना (आयत 10), "जो असत्य था"

उस पर विश्वास किया (आयत 11)। थिस्सलुनीकियों के मसीहियों का "सत्य में विश्वास" था। इसलिए, वे बुलाए हुए थे। वेदरली ने लिखा, "वह उन्हें उनके विश्वास के आधार पर सशर्त चुनता है।"[38]

मसीही किस के लिए बुलाए गए हैं? हमें "उद्धार" या पापों से मुक्ति के लिए बुलाया गया है। हमें "प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त" (आयत 14; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:9) करने के लिए भी बुलाया गया है। कुछ सीमित रीति से हम इस जीवन में ही मसीह की महिमा प्राप्त कर लेते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18)। लेकिन, हम उस महिमा में कहीं अधिक रीति से स्वर्ग में सहभागी होंगे (रोमियों 8:18; फिलिप्पियों 3:20, 21)। यह सब इसलिए संभव है क्योंकि परमेश्वर ने हमें बुलाया है।

हमारे चुनाव में हमारी क्या भूमिका है? हमें अपनी बुलाहट में "दृढ़ होकर खड़े" रहना है। पौलुस ने लिखा, "इसलिये हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो" (आयत 15)। झूठी आत्माओं या नकली पत्रियों द्वारा "अचानक अस्थिर" होने के स्थान पर (2:2), उन्हें "दृढ़ होकर खड़े" रहना था। पौलुस ने इस अभिव्यक्ति को बहुधा प्रयोग किया है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 3:8; 1 कुरिन्थियों 16:13)।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को परामर्श दिया कि जो "बातें" उन्होंने "वचन" के द्वारा सीखीं थीं उन्हें थामे रहें। अभिव्यक्ति "वचन" उन बातों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो पौलुस ने, जब वह उनके साथ था तब, उन्हें मौखिक रीति से सिखाई थीं।

पौलुस ने उन से यह भी कहा कि उन "बातों" को जो "पत्रियों" द्वारा सिखाई गई थीं उन्हें भी थामे रहें। इसमें 1 थिस्सलुनीकियों भी सम्मिलित है, जिसे उसने कुछ महीने पहले लिखा था। हमें भी प्रेरितों और अन्य प्रेरणा पाए हुए लेखकों द्वारा लिखी गई अनेक पुस्तकों एवं पत्रियों को अपनी आँखों से पढ़ने का लाभ है। पवित्र-शास्त्र परमेश्वर से आया है, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से रचा गया है। वे हमारे लिए उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये काम आते हैं (2 तीमुथियुस 3:16)।

कुछ लोग आयत 15 के गलत अर्थ के आधार पर ऐसी परंपराओं को समर्थन देते हैं जिन्हें मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक परंपरा उपयोगी अथवा प्रेरणा से नहीं है। हमें पौलुस की चेतावनी का मूल्यांकन करना चाहिए। अच्छी परंपराएं हैं और बुरी परंपराएं हैं (1 कुरिन्थियों 11:2 की मत्ती 15:6 से तुलना कीजिए)। दोनों के मध्य का अन्तर उनका स्रोत है। अच्छी परंपराएं पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा, प्रेरितों से आती हैं। बुरी परंपराएं विभिन्न लोगों द्वारा एक से दूसरे को पहुँचाई गई प्रेरणा रहित धार्मिक आज्ञाएं हैं। नया नियम पुष्टि करता है कि पवित्र आत्मा प्रेरितों का मार्गदर्शक था। उनके पास परमेश्वर द्वारा विशेष अन्तदृष्टि थी जो अन्य पुरुष और महिलाओं के पास नहीं होती है

(देखें यूहन्ना 16:13; 1 कुरिन्थियों 14:37; 2 पतरस 1:13–21)।

वे सभी परंपराएं, हमें जिनका पालन करना है, प्रेरणा पाए हुए प्रेरितों से आई हैं। बहुतों ने मनुष्यों की उन परंपराओं का अनुसरण किया है जो पिछले दो हज़ार वर्षों में विकसित हुई हैं। आज, वे सभी परंपराएं जिनका हमें पालन करना है पवित्र-शास्त्र में दर्ज हैं। मौखिक परंपराएं या बाद की परंपराओं को त्याग देना चाहिए।

मसीह के अनुयायी होने के कारण, हम अपनी बुलाहट में "दृढ़ खड़े रहने" के लिए उत्तरदायी हैं। इसका अर्थ है कि हमें पवित्र-शास्त्र को जानना है और जब आवश्यकता हो उसकी रक्षा करनी है। हमें अपनी व्याख्याओं को लेकर कट्टर नहीं होना है, वरन हमें बाइबल के अधिकार के प्रति उच्च आदर रखना है, पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में चलना है न कि अपनी इच्छानुसार। हमें प्रेरणा पाई हुई शिक्षाओं को अपनी पीढ़ी के लिए तथा आने वाली पीढ़ियों के लाभ के लिए थामे रखना है।

अपनी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए परमेश्वर हमारी सहायता करता रहता है। परमेश्वर ने हमें चुनकर और हमें पवित्र बनाने के द्वारा पहले ही हमारी सहायता की है (आयत 13), परन्तु अपनी बुलाहट के लिए "दृढ़ खड़े रहने" के लिए भी हमें सहायता की आवश्यकता है। परमेश्वर ही वह एकमात्र बल है जो वास्तव में हमारी सहायता कर सकता है जिससे हम सौदे के मानवीय छोर को थामे रह सकें।[39] इसलिए, पौलुस ने यीशु और परमेश्वर से निवेदन किया, उनसे माँगा कि वे बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने में भाइयों की सहायता करें (आयत 16)।

उसने माँगा कि मसीहियों के हृदय में शान्ति हो (आयत 17)। निराश हृदयों को प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। थिस्सलुनीकियों में, संभवतः कुछ सदस्यों को प्रोत्साहन की आवश्यकता थी कि वे गलत शिक्षाओं द्वारा विचलित ना हो जाएं। आज कोई व्यक्ति किसी विषम परिस्थिति या जीवन में आए किसी कठिन परिवर्तन के कारण निराश हो सकता है। पौलुस ने शान्ति के लिए प्रार्थना की, और हमें भी हमारे प्रोत्साहन के स्रोत परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए।

पौलुस ने परमेश्वर से यह भी माँगा कि वह उनके मनों को "हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़ करे" (आयत 17)। हम जब भी भले कार्य करते हैं, हमारे मनों को शान्ति और बल मिलना चाहिए। किसी दुःखी या बीमार की सहायता करने से हमारे जीवन में बल और प्रोत्साहन आना चाहिए। जब हम अपने शब्दों द्वारा प्रोत्साहित करें, सिखाएं, या सुधारें, तो इससे मसीह और उसकी शिक्षाओं का अनुसरण करने की हमारी वचनबद्धता को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। हमें पौलुस के समान प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमारी तथा सभी मसीहियों की सहायता करे कि हम अपनी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य

तथा उन उत्तर दायित्वों को स्वीकार करें जो हमने मसीही होने पर लिए थे।

परमेश्वर ने हमें एक उद्देश्य के लिए बुलाया है। हमें जीवन की घटनाओं अथवा मनुष्य की उन शिक्षाओं के कारण जो बाइबल के अनुसार नहीं हैं भटक नहीं जाना है। हमें निशाने की ओर दौड़ते चला जाना है, ताकि वह इनाम पाएं, जिस के लिये परमेश्वर ने मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है (फिलिप्पियों 3:14)। EE

परमेश्वर का सत्य और मनुष्य की गलती (2:1–12)

बहुत से लोगों के लिए, आयु के बढ़ते जाने का अर्थ होता है बल और क्षमता की कमी, संबंधियों और मित्रों का जाते रहना। ऐसे समय में, अनन्तकाल के स्थाई लाभ अधिक स्पष्ट तथा आनंददायक हो सकते हैं। मसीही के लिए, इस जीवन का अन्त आदर और महिमा की पराकाष्ठा है। हमारे देहान्त से पहले यीशु आ भी जाए, तो भी हम एक महिमामय पुनर्मिलन की बाट जोह सकते हैं।

थिस्सलुनीके में कुछ मसीहियों को चिन्ता थी कि जिनका देहान्त हो चुका है, उन्होंने यीशु के साथ इस महिमामय पुनर्मिलन के अवसर को खो दिया है। 1 थिस्सलुनीकियों में उन्हें आश्वस्त किया गया कि देहान्त के कारण कोई विश्वासयोग्य मसीही यीशु के पुनःआगमन के आनंद से वंचित नहीं रहेगा।

2 थिस्सलुनीकियों के लिखे जाने के समय मसीही उन समाचारों के कारण विचलित थे कि यीशु का पुनःआगमन हो चुका था। यदि ऐसा था, तो वे सब उससे तथा अपने दिवंगत भाइयों से पुनर्मिलन होने से वंचित रह गए थे। पहली पत्री के समान, दूसरी का उद्देश्य भी उन्हें मसीह के पुनःआगमन के सत्य के बारे में आश्वस्त करना था। यह सत्य, गलत की तुलना में, दिखाता है कि मसीही का भविष्य निश्चित है।

गलत शिक्षा, जो सदा हानिकारक होती है, मसीहियों को जीवन मार्ग की पटरी से हटा सकती है। वह उन्हें उससे जो अधिक महत्वपूर्ण है भटका सकती है और उन संसाधनों को, जिन्हें ईश्वरीय कार्यों में लगाना है, व्यर्थ कर सकती है। हम गलत शिक्षा को हानि पहुँचाने से कैसे रोक सकते हैं? इससे उत्पन्न खतरों का सामना कैसे कर सकते हैं?

गलत शिक्षा को पहचानें (2:1–5)। कलीसिया के इतिहास में व्यक्तियों ने बहुधा नए सिद्धांतों का प्रचार किया है, कभी-कभी भिन्नता के कारण भौचक्का कर देने वाले सिद्धांतों का। बहुधा ये शिक्षाएं भविष्यवाणियों के पूरा होने से संबंधित होती हैं। अधिकांशतः पुराने नियम की भविष्यवाणियों, प्रभु के अपना राज्य स्थापित करने आने, या नए नियम की भविष्यवाणियाँ, प्रभु के न्याय करने आने से संबंधित।

अनेक अवसरों पर लोगों ने भविष्यवाणी की है कि यीशु बस आने ही वाला

है या गुप्त में आ चुका है। इस कथित प्रकटीकरण से लोग अचंभित हो सकते हैं और भयभीत होकर अपने विश्वास और जीवन से फिर सकते हैं। हम ऐसी गलती को कैसे पहचान सकते हैं और उससे कैसे बच सकते हैं?

पहले, हमें गलती के स्रोत को पहचानना है। जब एक व्यक्ति कोई ऐसी शिक्षा प्रतिपादित करता है जिसका पता पहले किसी और को नहीं रहा है, जब केवल कोई एक व्यक्ति किसी विशेष प्रकाशन या अन्तदृष्टि का दावा करता है, हमें सचेत हो जाना चाहिए। यह विशेषतः तब मानने योग्य होता है जब वह व्यक्ति दावा करता है कि उसकी जानकारी सारे ज्ञान या प्रकाशन को समझने की कुंजी है, या वह दावा करे कि शेष सभी गलत हैं। बहुधा वह शिक्षा बाइबल के किसी अस्पष्ट या आलंकारिक खण्ड पर आधारित होती है, न कि नए नियम के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के पूर्ण और अन्तिम प्रकाशन पर।

थिस्सलुनीकियों के मसीहियों को एक नया प्रकाशन प्रस्तुत किया गया था (2:1, 2), संभवतः प्रेरितों के अधिकार के दावे के साथ। उन्हें सावधान किया गया कि "वे शीघ्र विचलित" ना हों, क्योंकि वह धोखा था। उन्हें सचेत रहना था। इसी प्रकार, हमें भी प्रत्येक नई शिक्षा के प्रति सदा सावधान रहना चाहिए, चाहे वह कितनी भी रोमांचक क्यों ना हो। यह परमेश्वर के प्रकाशन के स्थान पर मनुष्य के मस्तिष्क का उत्पाद हो सकती है।

दूसरे, हमें शिक्षा की जाँच करनी चाहिए। क्या वह प्रभु यीशु और उसके प्रेरणा पाए शिक्षकों से आने वाली शिक्षाओं से मेल खाती है? यदि वह नए नियम की शिक्षा का खंडन करती है, तो हम जान सकते हैं कि वह सत्य नहीं है। हमें गलत शिक्षा को समझने में कठिनाई हो सकती है; परन्तु यदि हम सत्य को जानेंगे और नई शिक्षा उसका खंडन करती है, तो अवश्य ही वह गलत है।

थिस्सलुनीके के वासी चिंतित और व्याकुल थे, परन्तु उन्हें स्मरण कराया गया कि उनके पास यीशु के पुनःआगमन का सत्य पहले से ही विद्यमान था (2 थिस्सलुनीकियों 2:5)। यदि वे उस सत्य को जानते जो वे पहले ही प्राप्त कर चुके थे, तो वे नई गलती को पहचान पाते। उन्हें यह नहीं कहा गया था कि वह गलती कब उठ खड़ी होगी या कौन उसे बढ़ावा देगा, परन्तु वे यह जान सकते थे कि वह गलत है और उसका शिक्षक स्वयं परमेश्वर ही का विरोध करेगा।

जो लोग परमेश्वर के सत्य का विरोध करते हैं वे परमेश्वर का विरोध करते हैं। वे अपने आप को धर्म का अधिकारी बना लेते हैं और परमेश्वर के लोगों के मनों में परमेश्वर के स्थान को हथियाना चाहते हैं। उन्हें परमेश्वर विरोधी पहचाना जाना चाहिए, परन्तु यह तब ही संभव है जब परमेश्वर के लोग सत्य को जानें।

सत्य का अध्ययन करना, सत्य को सीखना, और सत्य के साथ बने रहना ही गलती से बचने की सर्वोत्तम प्रतिरक्षा है! अज्ञान, बाइबल की उपेक्षा, और

परमेश्वर के वचन के साथ लापरवाही गलत शिक्षाओं के आने के लिए खुले द्वार हैं। हमें सत्य को जानना ही है। केवल सत्य ही हमें स्वतंत्र कर सकता है (यूहन्ना 8:32)।

सच्ची शिक्षाओं को सुदृढ़ करना (2:6–9)। सच्चाई सदा सत्य है, परन्तु इसे भुलाया जा सकता है, विशेषकर तनाव के समयों में। हमारे विश्वास के मूल सिद्धांतों को हमें दोहराते रहना चाहिए, जिससे जब भी कठिनाइयाँ आएं हम आश्वस्त और शांत रहें। यदि हम मूल सिद्धांतों पर सतत बल देते नहीं रहेंगे, तो हमारे विश्वास की नींव असुरक्षित प्रतीत होगी।

अच्छे बाइबल शिक्षक यह निर्धारित करेंगे कि सत्य दोहराया जाए। "वे ही बातें तुम को बार - बार लिखने में मुझे तो कोई कष्ट नहीं होता, और इस में तुम्हारी कुशलता है" (फिलिप्पियों 3:1ब)। प्रत्येक शिक्षण कार्यक्रम में सतत समीक्षा सम्मिलित होनी चाहिए। यदि हम यह सोचें कि अच्छी शिक्षा से तात्पर्य केवल नई और भिन्न शिक्षा देना है, तो हम यीशु और उसके प्रेरितों द्वारा प्रयुक्त एक मूल विधि से चूक गए हैं – आत्माओं को सुरक्षित रखने के लिए सत्य को बार-बार दोहराना।

थिस्सलुनीकियों की पत्रियों में, इसी पद्धति का अनुसरण किया गया। दर्जन से अधिक बार पौलुस ने जो पहले सिखाया गया था उसका हवाला दिया। उद्देश्य था इस सत्य को भली-भांति सीख लेना जिससे वह उनके शेष जीवन भर उपयोगी रहे।

थिस्सलुनीकियों को आने वाले विधर्म, अर्थात विश्वास से हट जाने के बारे में पहले ही सचेत कर दिया गया था। उन्होंने इस प्रकाशन को प्राप्त किया था कि कोई परमेश्वर को चुनौती देगा। वे यह भी जानते थे कि ऐसा यीशु के पुनःआगमन से पहले होगा। क्योंकि ऐसा अभी तक नहीं हुआ था, इससे वे जान सकते थे कि यीशु के पुनः आ जाने के समाचार गलत थे। इन समाचारों के कारण उन्हें विचलित हो जाने का कोई औचित्य नहीं था, परन्तु उन्हें परमेश्वर के मन से आई सच्ची शिक्षा को स्मरण करवाए जाने की आवश्यकता थी।

सच्ची शिक्षा पर विश्वास करें (2:10–12)। लोगों द्वारा झूठी शिक्षाओं के अपनाने से हम कभी-कभी अचंभित होते हैं। हम आशा करते हैं कि क्योंकि सन्देश गलत है, इसलिए लोग उसे अस्वीकार कर देंगे। बहुधा लोग सत्य को अस्वीकार करके गलत शिक्षाओं को स्वीकार कर लेते हैं। वे ऐसा कैसे कर सकते हैं?

इस का उत्तर है रवैया। गलती में आकर्षण हो सकते हैं। एक आकर्षण है श्रेष्ठ ज्ञान वाला पहचाने जाने का गौरव तथा प्रतिष्ठा। एक अन्य है नई शिक्षाओं के रोमांच की लालसा। कभी-कभी गलत शिक्षाओं को स्वीकार करने से व्यक्ति अधिक लोकप्रिय हो जाता है क्योंकि गलत शिक्षाएं अधिक व्यापक रीति से स्वीकार की जाती हैं। क्योंकि हम अन्य लोगों की उपेक्षा से डरते हैं, इसलिए

सत्य को स्वीकार करके उनकी उपेक्षा लेने के स्थान पर उनके साथ सहमत होना हमारे लिए अधिक सुविधा पूर्ण होता है। कभी-कभी लोग गलत शिक्षाओं को इसलिए स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वे अपने विश्वास के परिणाम को देखने नहीं पाते। वे यह नहीं देख पाते हैं कि कैसे गलत शिक्षाएं परमेश्वर के वचन का खंडन करती हैं और आत्माओं को क्षति पहुँचाती हैं।

सत्य के प्रति प्रेम न होना सदा ही गलती का कारण होता है। जो गलत शिक्षाओं को स्वीकार करते हैं उनके लिए सत्य के प्रति प्रेम कभी प्राथमिकता नहीं होती है; वे गलती को अधिक आकर्षक देखते हैं। उनके लिए गलती के साथ जुड़ी प्रतिष्ठा, लोकप्रियता, और स्वीकारा जाना सत्य से अधिक महत्वपूर्ण होता है। सत्य के प्रति प्रेम की अवहेलना का दुखद परिणाम आत्माओं का खो जाना होता है। TP

परमेश्वर के सत्य का महत्व (2:13—3:5)

शिक्षकों को पवित्र-शास्त्र के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को जानना और सिखाना अनिवार्य है। अपने व्यक्तिगत विश्वास के आधार के लिए श्रोताओं का इन शिक्षाओं को सुनना सौभाग्य है और उन्हें सीखना उनका दायित्व है।

विशेषकर शिक्षकों को लिखी गई तीन पत्रियों - 1 और 2 तीमुथियुस तथा तीतुस में - ग्यारह बार हम इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ पाते हैं "खरे उपदेश" (1 तीमुथियुस 1:10), "अच्छे उपदेश" (1 तीमुथियुस 4:6; 2 तीमुथियुस 4:3; तीतुस 1:9; 2:1), "उपदेश में सफाई" (तीतुस 2:7), "खरी बातें" (1 तीमुथियुस 6:3; 2 तीमुथियुस 1:13), "विश्वास में पक्के" (तीतुस 1:13; और देखें 2:2), एवं "विश्वासयोग्य वचन" (तीतुस 1:9)। हम में से प्रत्येक को परमेश्वर के सत्य की बुनियादी बातों को जानना है जिससे हम परमेश्वर द्वारा उसके वचन का उपयोग करने के लिए लैस किए जा सकें।

2 थिस्सलुनीकियों 2:15 में, पौलुस ने थिस्सलुनीके के सन्तों को प्रोत्साहित किया कि वे परमेश्वर के वचन के साथ अपने संबंध को बनाए रखें। पवित्र-शास्त्र की शिक्षा क्यों इतनी महत्वपूर्ण है – उनके और हमारे लिए? परमेश्वर के सत्य का महत्व क्या है?

परमेश्वर हमें बचाने के लिए सत्य को प्रयोग करता है (2:13, 14)। लोगों को शैतान के खेमे की खोई हुई आत्माओं से परमेश्वर के बचाए हुए सन्तान कौन बनाता है? यह परमेश्वर करता है। खोई हुई आत्माओं को बचाने के लिए वह क्या उपयोग करता है? उसका वचन।

हम सुसमाचार के द्वारा बुलाए जाते हैं, जीवित वचन यीशु मसीह के सन्देश द्वारा। परमेश्वर ने व्यक्ति में होकर सन्देश भेजा है – यीशु के व्यक्तित्व में। इसलिए यीशु को परमेश्वर का वचन कहा जाता है (यूहन्ना 1:1)। वह हमारे लिए परमेश्वर का सन्देश है। परमेश्वर सुसमाचार के द्वारा हमें महिमा के लिए

बुलाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। परमेश्वर के द्वारा बुलाए जाने का और कोई मार्ग नहीं है। इसलिए प्रेरितों को निर्देश दिया गया कि "तुम सारे जगत में जा कर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो" (मरकुस 16:15)। परमेश्वर को प्रतिक्रिया देने और उसकी आत्मिक आशीषों को बाँटने का और कोई मार्ग नहीं है।

हमें परमेश्वर के वचन द्वारा बुलाया गया; हम उसी वचन के द्वारा बचाए जाते हैं और पवित्र किए जाते हैं "परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ" (2:13ब)। हम परमेश्वर के आत्मा के द्वारा शुद्ध या पवित्र किए जाते हैं जब सत्य में हमारा विश्वास हमें यीशु में बपतिस्मा लेने के लिए अगुवाई करता है। परमेश्वर हमें अपने आत्मा के द्वारा बचाता है जब हम बपतिस्मा के लिए उसकी आज्ञा को मानते हैं। हनन्याह ने शाऊल/पौलुस से कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम ले कर अपने पापों को धो डाल" (प्रेरितों 22:16)। बपतिस्मा पर हम पापों से शुद्ध किए जाते हैं और परमेश्वर के साथ जुड़ जाते हैं।

उद्धार, इस प्रकार, दो बुलाहट के समान देखा जा सकता है : परमेश्वर का हमें बुलाना और हमारा परमेश्वर को बुलाना। पहली बुलाहट तब होती है जब परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमें अपने पास बुलाता है। यह तब होता है जब हमें सुसमाचार सिखाया जाता है। दूसरा तब होता है जब हम उस सुसमाचार को प्रतिक्रिया देते हैं। जब हमें वचन सिखाया जाता है और हमें बोध होता है कि हमें उद्धार की आवश्यकता है, हम उस वचन पर विश्वास या भरोसा लाकर परमेश्वर को पुकारते हैं कि वह हमें बचाए, वह जो उनसे उद्धार का वायदा करता है जो सन्देश की आज्ञाकारिता पश्चाताप और बपतिस्मा के द्वारा करते हैं।

परमेश्वर की शिक्षाओं की हमारी आज्ञाकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम उद्धार के परमेश्वर के प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं। "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जा कर धर्म के दास हो गए" (रोमियों 6:17, 18)।

परमेश्वर सत्य के द्वारा हमें बल देता है (2:15)। जब हम बचा लिए जाते हैं, परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमें प्रोत्साहित करता है और बलवन्त बनाता है। वह हमें बढ़ने, विकसित होने, और जीवन में फल लाने में सहायता कर सकता है।

यह कैसे होता है? उत्तर 2:15 में है : "इसलिये हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो।" ये "बातें" मनुष्य के विचार नहीं थे; वे प्रेरणा से प्राप्त निर्देश थे।

मसीहियों को बढ़ने और बलवन्त होने के लिए परमेश्वर की शिक्षाओं की आवश्यकता है। यह शिक्षा पहले ही दी जा चुकी है; परन्तु कुछ लोगों के लिए परमेश्वर के वचन में दी गई सच्चाई पर्याप्त नहीं होती है। उन्हें नई और भिन्न जानकारियाँ चाहिए होती हैं; जो परमेश्वर ने पहले से दे रखा है वे उससे सन्तुष्ट नहीं होते। परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के वचन की अवहेलना करते और उसे बदल देते हैं, और अपनी आशीषें खो देते हैं। एक भिन्न सन्देश आकर्षक और रोमांचक हो सकता है; परन्तु वह बलहीन है, क्योंकि वह परमेश्वर का सन्देश नहीं है। सामर्थ्य केवल परमेश्वर के पास है। केवल परमेश्वर ही अपने वचन को हमें बचाने और बलवन्त बनाने के लिए उपयोग कर सकता है!

मसीहियों को अपने अविरल बढ़ते रहने, पोषण, और फलवन्त होने के लिए परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है। यीशु द्वारा लूका 8 में दिए गए भूमि के दृष्टांत में, जो लोग अंकुरित हुए, बढ़े, और फले-फूले वे थे जिन्होंने परमेश्वर के वचन का अपने हृदयों में पूरा उपयोग किया। उसी प्रकार, हमें भी उसके वचन का अपने मार्गदर्शन के लिए उपयोग करना होगा यदि हम वैसा बढ़ना चाहते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है।

परमेश्वर सत्य के द्वारा हमें शान्ति देता है (2:16, 17)। परमेश्वर का वचन न केवल हमें जो वह चाहता है उसे करने का बल देता है; वह हमें शान्ति और आशा भी देता है। परमेश्वर चाहता है कि जो सुरक्षा और नियति वह हमें अपने वचन के द्वारा प्रदान करता है हम उससे प्रोत्साहित हों। समस्त बाइबल निराश लोगों को आशा देने के लिए प्रयोग की जा सकती है। पौलुस ने कहा, "जितनी बातें पहिले से [पुराना नियम] लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें" (रोमियों 15:4)।

परमेश्वर का सहानुभूतिपूर्ण, ध्यान रखने, और देखभाल करने वाला चरित्र उसके विवरण "दया का पिता, और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर" (2 कुरिन्थियों 1:3ब) के द्वारा प्रमुख होता है। यीशु और परमेश्वर पिता की सप्रेम शान्ति थिस्सलुनीके के मसीहियों को सताव के समय में सहनशीलता देने और प्रोत्साहित करने में बहुमूल्य संपदा थी। "हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही, और हमारा पिता परमेश्वर" ही वे हैं जिन्होंने, "हम से प्रेम रखा और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है" (2:16)।

परमेश्वर सत्य के द्वारा हमारी सुरक्षा करता है (3:1–5)। हमारे मानव शरीरों को जो क्षति पहुँचा सकता है, सामान्यतः हमें उसका बोध होता है। हम सही प्रकार का भोजन खाने, सड़कों पर सुरक्षित चलने, और अन्य क्रियाओं द्वारा अपने शरीरों को सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं। आत्माएं भी क्षतिग्रस्त हो सकती हैं। शैतान हमारी आत्माओं की क्षति करने के लिए बुरे प्रभावों के पूरे संग्रह का प्रबंधन करता है। जो कार्य वास्तविकता में हमारी हानि करते हैं

उन्हें वह हमारे लिए भला कहता है। वह मिथ्या को सत्य कहता है। वह लोगों, वस्तुओं और विचारों को लेकर उन्हें तोड़ता-मरोड़ता है जिससे हमारी हानि हो सके। शैतान हमारी आत्माओं पर हमला करने के लिए किसी को भी और कुछ भी प्रयोग कर सकता है।

हमारी आत्माओं पर होने वाले इस हमले का सामना करने की सामर्थ्य किस के पास है? केवल परमेश्वर ही यीशु मसीह के द्वारा हमारी आत्माओं को पाप से बचा सकता है और हमारे जीवनों को निर्देशित कर सकता है जिससे वे शैतान के जाल में फिर से न फंसें। केवल परमेश्वर का वचन ही शैतान के झूठ और विकृतियों से हमको सुरक्षित रख सकता है। केवल परमेश्वर का वचन ही हमें दैनिक जीवन के लिए सही दिशा निर्देश देता है : "परन्तु प्रभु सच्चा है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा और दुष्ट से सुरक्षित रखेगा" (3:3)।

क्योंकि परमेश्वर का वचन ही शैतान के विरुद्ध हमारी सुरक्षा है, हमें इस वचन को जितने संभव हो उतने हृदयों तक पहुँचाना है। प्रत्येक को इसकी आवश्यकता है – देश के सबसे धनी व्यक्ति से लेकर सबसे निर्धन तक। पौलुस ने अन्य मसीहियों से प्रार्थनाओं के लिए कहा जिससे वचन अपना सुरक्षा प्रभाव उनके जीवनों में भी लाए और उन्हें शैतान के अनुयायियों से सुरक्षित रखे : "अन्त में, हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना किया करो कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ, और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं" (3:1, 2)।

उपसंहार। सत्य सदा सत्य ही रहता है, परन्तु परमेश्वर का सत्य इससे भी कहीं बढ़कर है। वह जीवन का मार्ग और पाप से स्वतंत्रता है। यह बचाने, पोषण करने और शान्ति देने की सामर्थ्य है। यीशु ने कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:31, 32)। यीशु के सच्चे शिष्य उस सत्य की कीमत को, जो यीशु प्रकट करने आया था, जानते हैं। हमें परमेश्वर के सत्य को ढूँढ़ना, उस पर विश्वास करना और उसकी कीमत को जानना है!

जब हम उसके वचन को पढ़ते और बाँटते हैं, तो परिणाम वह बहुमूल्य फल होता है जो औरों की सहायता और परमेश्वर की महिमा करता है। इससे "हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़" (2:17) होने का बहुमूल्य फल आता है।

परमेश्वर के वचन से भरे हुए हृदय ईश्वरीय हृदय होंगे। वे परमेश्वर के हृदय और यीशु के हृदय के समान हृदय होंगे। वे ऐसे हृदय होंगे जो परमेश्वर और यीशु के स्वभाव को अपने विचारों, वार्तालाप, और कार्यों से बाँटेंगे। वे सामर्थ्य, प्रेम, और शान्ति के हृदय होंगे! परमेश्वर हमारी सहायता करता है कि हम औरों को सिखाएं कि कैसे नए जीवन का आरंभ करें, सामर्थ्य और शान्ति में बढ़ें, बुराई से बचे रहें, और परमेश्वर के लिए बहुमूल्य फल लाएं।

"परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुआई करे" (3:5)। TP

समाप्ति नोट्स

[1]देखें ए. टी. रॉबर्टसन, *दि एपिस्टलस ऑफ पॉल*, वाल. 4, *वर्ड पिक्चरस वउ दि न्यू टेस्टामेंट* (नेशविलेः ब्रोडमैन प्रैस, 1931), 47.)। [2]रेमंड सी. केल्सी, *दि लैटरस ऑफ पॉल टू दि थिस्सलोनियंस*, दि लिविंग वर्ड कमैंट्री, वाल. 13 (ऑस्टिन, टेक्सस : आर. बी. स्वीट कम्पनी, 1968), 150. [3]सी. एफ. हॉग और डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एपिस्टलस ऑफ पॉल टू दि थिस्सलोनियन्स* (श्रेवेपोर्ट, लास. : लैम्बर्ट पबलिशिंग कम्पनी, 1977), 243. [4]पौलुस और याकूब के लिए, "नजदीक है" इसका अर्थ यह नहीं था दशक में या शताब्दी में। उनके कहने का अर्थ यह था कि अन्तिम काल (मसीही काल) उसके आने से पहले आरम्भ हो चुका था। [5]ब्रूस एम. मेटज़गेर, *ए टैक्सचूएल कमैंट्री ऑन दि ग्रीक टैस्टामेंटः ए कम्पेनियन वालुयम टू दि यूनाइटिड बाइबल सोसायटीज़' ग्रीक न्यू टेस्टामेंट,* दूसरा संस्करण, (न्यूयॉर्क : यूनाइटिड बाइबल सोसायटीज़, 1994), 567. [6]एफ. एफ. ब्रूस, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वॉल्यूम 45 (वाको, टेक्सस : वर्ड बुक्स, 1982), 168. [7]एलबर्ट बार्नेस, *नोटस ऑन दि न्यू टेस्टामेंट, एक्सप्लानेटरी एण्ड प्रैक्टीकलः थिस्सलोनियंस, तिमोथी, तीतुस एण्ड फिलेमोन*, अभिवर्धित मुद्रण इडी. रॉबर्ट फ्रियु (ग्रैंड रेपिडस, मिशी. : बेकर हाऊस, 1949), 80–96. [8]इबिद., 81. [9]रॉबर्टसन, 51. [10]देखें लिओन मौरिस, *दि फर्स्ट एण्ड सैकण्ड एपिसल स टू थिस्सलोनियन्स*, दि न्यू इटंरनेशनल कमैंट्री ऑन दि न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रिपिडस, मिशी. : डब्लयू एम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1959), 228–29.

[11]देखें हॉग एण्ड वाइन, 258. [12]हुगो मैकॉर्ड, *मैकॉर्ड'स न्यू ट्रांसलेशन ऑफ दि एवरलासटिंग गॉसपल* (हैंडर्सन, टेन्न. : फ्रीड हार्डमैन यूनिवर्सिटी, 1988)। [13]हॉग एण्ड वाइन, 262. [14]हैन्नरी एलफोर्ड, *दि ग्रीक टैस्टामेंट,* रिव. एवरेट्ट एफ. हैरीसन (शिकागोःमूडी प्रैस, 1958), 3:291. [15]मौरिस, 231. [16]रॉबर्टसन, 53. [17]केल्सी, 156. [18]इबिद. [19]मौरिस, 233. [20]रॉबर्टसन, 53.

[21]हॉग एण्ड वाइन, 267. [22]1 थिस्स्लुनीकियों 1:4; 2:1, 9, 14, 17; 3:7; 4:1, 9, 10 (दो बार), 13; 5:1, 4, 12, 14, 25–27; 2 थिस्स्लुनीकियों 2:1, 13, 15; 1:3; 3:1, 6, 13. [23]मौरिस, 237–38एन. [24]*दि ग्रीक न्यूटैस्टामेंट,* 4था संशोधित संस्करण, सम्पादित, बारबारा अलन्द, कर्ट अलन्द, जोहानेस कारवीडोपोलोस, कर्लो एम. मार्टिनी, और ब्रूस एम. मेटज़गेर (स्टट्टगार्टः यूटाइटिड बाइबल सोसायटी, 1998)। [25]हॉग एण्ड वाइन, 273. [26]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंगलिश लैक्सीकन ऑफ दि न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर क्रिश्चियन लिटरेचर*, तीसरा संस्करण, संशोधित और सम्पादित. फ्रैडरिक विलियमस डैंकर (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 763. [27]डेविड जे. विलियमस, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, न्यू इंटरनेशनल बिबलिकल कमैंट्रीः न्यू टैस्टामेंट सिरीज, वाल. 12 (पीबॉडी, मास. : हैंडरिक्टसन पबलिशर्स, 1992), 136. [28]जॉन स्टॉट, *दि गॉसपल एण्ड दिन इंड टाईम* (डॉनरस ग्रूव,

इलिनोइ. : इंटरवर्सिटी, 1991), 180. [29]जे. डब्लयू मैकगार्वे और फिलिप्प वाय. पेंडलटन, *थिस्सलोनियंस, कुरिन्थियन्स, गलैशियंस एण्ड रोमनस*, दि स्टैंडर्ड बाइबल कमैंट्री (सिनसिन्नाटी, ओहियोः स्टैंडर्ड पबलिशिंग फाऊँडेशन, 1916), 41. [30]इबिद., 41–43.

[31]डेविड लिप्सकोम्ब, "कमैंट्री ऑन दिन सैकेंड एपिसल टू दि थिस्सलोनियन्स," में *ए कमैंट्री ऑन दि न्यू टैस्टामेंट एपिसल्स स*, संशोधित, जे. डब्ल्यू. शैफर्ड (नेशविलेः गॉसपल एडवोकेट, 1942), 5:95–96 में। [32]देखें मैकगार्वे ओर पेंडलटोन, 38–40. [33]मेरिल्ल सी. टेन्नी, *न्यू टेस्टामेंट टाईम्स* (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स : हैंडरिक्सन पबलिशर्स, 2001), 116. [34]जॉन वेदरली, *2 थिस्सलोनियंस*, दि कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री (जोपलिन, मो. : कॉलेज प्रैस पबलिशिंग कम्पनी, 1996), 252. [35]आइजैक वाट्स, "हाउ शॉल दि यंगमैन सिक्योर देयर हॉर्टस?" *साँग ऑफ फेथ एण्ड प्रेयस,* कम्पोज एण्ड इडिटड. एल्टोन एच. हॉवार्ड (वेस्ट मोनरोइ, ला. : हॉवार्ड पबलिशिंग कम्पनी, 1994)। [36]केल्सी, 157. [37]हॉग एण्ड वाइन, 273. [38]वेदरली, 276. [39]फ्रेम, 285.